04- वर्तमान में हनुमानः जीवन विकास की मार्गदर्शिका

05- सामाजिक परिवेश और संस्कृति को दर्शाते कथा चित्रण

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 29 दिसंबर, 2024

06- जिला मुख्यालय सहित अन्य ब्लाकों में बारिश, बढ़ेगी ठंड

07- दरवाजा तोड़ने फिर लौट आए दया!

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 90, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

(डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

दिसंबर में मानसून का अहसास

प्रदेश में 27-28 दिसंबर से बारिश के साथ ओले, तेज हवाओं ने मानसून का अहसास करा दिया।

डॉ.मनमोहन सिंह पंचतत्व में विलीन

कृतज्ञ देश ने नम आंखों से दी विदाई

● बेटी ने दी मुखाग्नि,राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री और सोनिया-प्रियंका गांधी रहीं मौजूद

● तीनों सेनाओं ने दी सलामी,राहुल गांधी शवयात्रा के साथ आए,कंधा भी दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार शनिवार को पूरे राजकीय सम्मान के साथ दिल्ली के निगमबोध घाट पर हुआ। कई राजनेता अंतिम संस्कार में शामिल हुए। इस मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी और राहुल गांधी समेत कई नेता मौजूद रहे। भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे भी मौजूद थे। पूर्व प्रधानमंत्री के पार्थिव शरीर को पहले राष्ट्रीय राजधानी स्थित कांग्रेस मुख्यालय ले जाया गया। केंद्र सरकार ने डॉ. सिंह के सम्मान में पूरे देश में सात दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। इस दौरान पूरे भारत में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का शनिवार को निगमबोध घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनके पार्थिव शरीर को सेना की तोपगाड़ी पर घाट पर लाया गया।

राहुल बोले-

निगमबोध घाट पर अंतिम संस्कार मनमोहन सिंह का अपमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए जमीन अब तक नहीं देने पर विवाद बढ़ता जा रहा है। राहुल गांधी ने शनिवार को कहा कि सिख समुदाय के पहले प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर करवाकर केंद्र सरकार ने उनका सरासर अपमान किया है। उधर, केजरीवाल ने कहा, ये खबर सुनकर मैं स्तब्ध हूं। मनमोहन के अंतिम संस्कार और स्मारक के लिए बीजेपी सरकार 1000 गज जमीन भी न दे सकी। अब तक के सभी प्रधानमंत्रियों का अंतिम संस्कार राजघाट पर किया जाता था। 27 दिसंबर को खड़गे ने स्मारक के लिए जमीन मांगी थी कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शुक्रवार की शाम को पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को पत्र लिखा था। कहा था कि डॉ. सिंह का अंतिम संस्कार जहां हो वहीं स्मारक बनाया जाए।

पीड़िता को 25 लाख मुआवजा,एसआईटी जांच के आदेश

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु में इस वक्त अन्ना विश्वविद्यालय की 19 साल की छात्रा के यौन उत्पीड़न का मामला सुर्खियों में है। अब इस मामले में मद्रास हाई कोर्ट ने एसआईटी जांच का आदेश दिया है। साथ ही कोर्ट ने राज्य पुलिस की वेबसाइट पर प्रकाशित एफआईआर में पीड़िता का विवरण उजागर करने में पुलिस की ओर से हुई गंभीर चूक के लिए पीड़िता को 25 लाख रुपये का अंतरिम मुआवजा देने का भी आदेश दिया।

कोर्ट ने पुलिस को पीड़िता और उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करने का भी निर्देश दिया। बार एंड बेंच की रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस एस.एम. सुब्रमण्यम और जस्टिस वी. लक्ष्मीनारायण की खंडपीठ ने चल रही जांच में विभिन्न चूकों को उजागर करने के बाद भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के तीन अधिकारियों वाली एसआईटी के गठन का आदेश दिया। कोर्ट ने विशेष रूप से इस बात को गंभीरता से लिया कि घटना की प्राथमिकी पढ़ने के बाद पुलिस ने पीड़िता द्वारा 19 वर्षीय युवक को दोषी ठहराया।

उर्वरकों की समय रहते उपलब्धता सुनिश्चित की जाएं: मुख्यमंत्री यादव

● वर्तमान वर्ष में गत चार वर्षों की तुलना में सर्वाधिक रही उर्वरकों की उपलब्धता

● जैविक तथा प्राकृतिक खाद के उपयोग के लिए किसान स्तर तक प्रोत्साहन की व्यवस्था हो

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि यूरिया, डीएपी जैसे रासायनिक उर्वरकों की समय रहते उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए गौवंश आधारित जैव उर्वरकों के उपयोग को प्रदेश में प्रोत्साहित किया जाए। कृषक, पारम्परिक अनुभव और स्वयं की पहल पर बड़े पैमाने में जैविक खाद का उपयोग कर रहे हैं। यह मिट्टी की गुणवत्ता और धरती की सेहत के लिए भी लाभप्रद है। उपयोग की जा रही जैविक खाद की मात्रा की गणना और दस्तावेजीकरण की आवश्यकता है। इस आधार पर प्रदेश में जैविक खाद के उपयोग को बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रोत्साहित करने का मॉडल विकसित किया जाए। राज्य की यह पहल अन्य प्रदेशों के लिए भी अनुकरणीय होगी। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को हतोत्साहित करने के लिए जैविक तथा प्राकृतिक खाद जैसे विकल्प किसानों को उपलब्ध कराए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में उर्वरक प्रबंधन की समीक्षा के दौरान यह विचार व्यक्त किए। मुख्यमंत्री के समत्व भवन में हुई बैठक में सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग, अपर मुख्य सचिव श्री राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सुप्रभात

आज की सुबह बहुत खूबसूरत है
उसने कहा
मैं झांक कर उसकी आंखों में देखा
वह दमक रही थी
आज हवाएं उठी हुई थीं
आन्दोलित था ताल का जल
लहरें बार-बार तट से
कुछ कहना चाह रही थीं
वैसे इन दिनों अक्सर टेर कर
वे मुझे भी रोकती थीं
और मैं उन्हें
एकटक देखता कहता
कि तुम मेरे भीतर बसी हुई हो
और तुम्हें मैं तब भी याद करता हूं
जब तुम यहां नहीं होती हो
और ताल का हृदय
विदीर्ण हो चुका होता है
वह हल्के से अपना हाथ बालों पर
घूमा लेती है
उसके भीतर बोल रहा होता है
पूरा जंगल
यूं तो वह न तो विहग-रव का
ज़िक्र करती है
और न ही किसी वन्य-गंध का
वह पूरे माहौल में डूबी रहती है
मैंने किसी खुदा को नहीं देखा
और न ही कभी
किसी प्रकृति-देवी को
अलबत्ता इस किनारे
सांझ को घर लौटती
लड़कियों और औरतों को देखा है
जो दिन भर
खेतों में हाड़तोड़ काम करने के बाद भी
कुछ चहकती चहकती होती हैं
अभी तो साक्षात प्रकृतिरूपा देवी
मुझे वह दिखाई दे रही है
जिसका रोम रोम सिहर रहा है
जो बंद हो गए सौंदर्य के कपाट
खोल रही है।

– रतन चौहान

मणिपुर में फिर भिड़े कुकी और मैतेई

● लगातार 5वें दिन हुई गोलीबारी, महिला और पत्रकार घायल ● सीएम बोले-कुकी उग्रवादियों ने शांति-सद्भाव पर किया हमला

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल ईस्ट में लगातार 5वें दिन कुकी और मैतेई ग्रुप के बीच फायरिंग हुई है। थामनपोकपी और सानासबी में शुक्रवार देर रात को गोलबारी में एक महिला घायल हो गई। वहीं, शनिवार सुबह गोलीबारी में एक लोकल न्यूज चैनल के वीडियो जर्नलिस्ट घायल हुए। शुक्रवार को भी सनसाबी इलाके में उग्रवादियों से मुठभेड़ में एक पुलिसकर्मी और एक गांव वाला घायल हुए था। स्थानीय लोगों के मुताबिक, यहां मोर्टार भी दागे गए थे। उधर, मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने कहा- इम्फाल ईस्ट के सनसाबी और थमनापोकपी में कुकी उग्रवादियों की गोलीबारी की कड़ी

निंदा करता हूं। निर्दोषों पर यह कायरतापूर्ण हमला मणिपुर की शांति और सद्भाव पर हमला है। सीएम ने कहा था- कुकी-मैतेई आपसी समझ बनाएं मणिपुर के सीएम बिरेन सिंह ने 25 दिसंबर को कहा था- मणिपुर को तत्काल शांति की जरूरत है। दोनों समुदायों (कुकी-मैतेई) आपसी समझ बनाएं। बीजेपी ही मणिपुर को बचा सकती है, क्योंकि वो एक साथ रहने के विचार में विश्वास करती है। उन्होंने कहा था कि आज मणिपुर में जो कुछ हो रहा है उसके कई कारण हैं। आज जो लोग राज्य को बांटने की कोशिश कर रहे हैं, वे पूछ रहे हैं कि सरकार क्या कर रही है। लोग सत्ता के भूखे हैं।

श्रीराम तिवारी बने सीएम के संस्कृति सलाहकार

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश शासन ने वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव एवं महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी को एक और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। उन्हें मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार के रूप में अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। इस संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग ने आदेश जारी किया है। आदेश के अनुसार श्रीराम तिवारी को उनके मौजूदा कार्यों के साथ-साथ मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। तिवारी को इस अतिरिक्त प्रभार के लिए अलग से किसी प्रकार का वेतन, मानदेय या भत्ते नहीं दिए जाएंगे। उनका वेतन और मानदेय उनके मूल पद से ही आहरित होगा। श्रीराम तिवारी वर्तमान में वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव और महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उनके अनुभव और दक्षता को देखते हुए उन्हें यह नई जिम्मेदारी दी गई।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25°c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 29 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

दो कदम आगे चीन, हिंद महासागर में कम नहीं है चुनौती

● भारत के लिए अब जरूरी हो गया है तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर ● चीन का नया एयरक्राफ्ट कैरियर फुजियान समुद्री परीक्षण में जुटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में बहुत कुछ दांव पर लगा है। भारत का समुद्री तट बहुत बड़ा है, लगभग 7,517 किलोमीटर। यह पश्चिम एशिया,अफ्रीका और पूर्वी एशिया के व्यस्त व्यापार मार्गों के लिए महत्वपूर्ण समुद्री रास्तों के बीच में स्थित है। भारत के पास अभी केवल दो एयरक्राफ्ट कैरियर हैं,जो अब उतने सक्षम नहीं हैं। तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर नौसेना की जरूरत ही नहीं,बल्कि आर्थिक विकास,रणनीतिक आवश्यकता और वैश्विक समुद्री शक्ति के रूप में भारत के उदय का प्रतीक भी होगा। भारत के लिए समुद्री सुरक्षा बहुत जरूरी है। इसलिए एयरक्राफ्ट कैरियर की जरूरत है। ये कैरियर समुद्र में भारत की ताकत को दर्शाते हैं

और दूर देशों में भी हमारी रक्षा भी करते हैं। हॉर्मुज से मलक्का तक समुद्री रास्तों की सुरक्षा हमारे व्यापार के लिए जरूरी है। इस साल अदन की खाड़ी में हुए हमलों से भारत को भी नुकसान हुआ। भारत के पास दो एयरक्राफ्ट कैरियर हैं। आईएनएस विक्रमादित्य रूस से 2013 में लिया गया था, जो पहले एडमिरल गोर्शकोव के नाम से जाना जाता था। आईएनएस विक्रांत 2022 में शामिल हुआ,जो भारत में बना पहला कैरियर है। यह भारत की तकनीकी ताकत दिखाता है। हालांकि,परिचालन सीमाओं के कारण कभी-कभी केवल एक ही वाहक युद्ध के लिए तैयार रह पाता है। एक तीसरा वाहक होने से लगातार दो वाहक हमेशा तैनात रहेंगे।

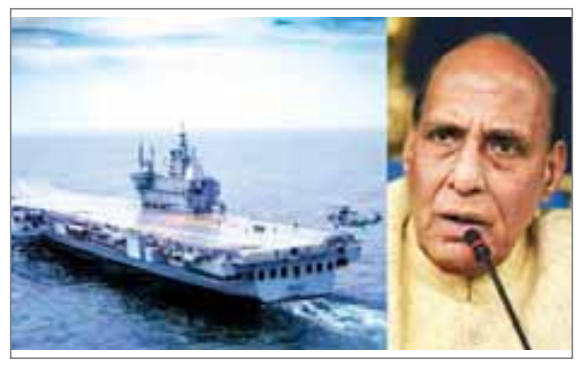

संक्षिप्त समाचार

हिमंता सरमा की मुश्किलें बढ़ाएंगी ममता बनर्जी

भाजपा के खिलाफ असम में टीएमसी का बड़ा प्लान

दिसपुर (एजेंसी)। गुवाहाटी में शुक्रवार को हुए एक खास कार्यक्रम में असम की सियासत ने नया मोड़ लिया, जब लगभग 500 नेताओं और कार्यकर्ताओं ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का दामन थाम लिया। इस मौके पर टीएमसी सांसद सुष्मिता देव और असम टीएमसी अध्यक्ष रमन बोरठाकुर की मौजूदगी रही। कांग्रेस, असम गण परिषद (एजीपी), असम जातीय परिषद (एजेपी) और भाजपा समेत कई पार्टियों के नेताओं का टीएमसी में शामिल होना मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा के लिए बड़ी चुनौती बन सकता है। सुष्मिता देव ने कहा कि इन नेताओं को उनकी पार्टियों में

नजरअंदाज किया जा रहा था, जिसकी वजह से उन्होंने टीएमसी का रुख किया। उन्होंने जोर देकर कहा,टीएमसी एक जमीनी कार्यकर्ताओं की पार्टी है और हम असम में एक मजबूत टीम बनाने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा के खिलाफ कांग्रेस से सीधी लड़ाई में भाजपा जीतती है, लेकिन जब लड़ाई टीएमसी, डीएमके या समाजवादी पार्टी जैसी पार्टियों से होती है, तो भाजपा हारती है। असम के लोगों को भी ध्यान देना चाहिए।

केजरीवाल की महिला सम्मान योजना की होगी जांच

पूर्व सीएम नाराज, बोले-बीजेपी की जमानत हो रही जब्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार की महिला सम्मान योजना की जांच की जाएगी, एलजी वीके सक्सेना ने इसे लेकर जांच के आदेश जारी कर दिए हैं। असल में ऐसे आरोप हैं कि महिला सम्मान योजना की वजह से कई लोगों का डेटा इकट्ठा किया गया। अब जिन गैर सरकारी लोगों का डेटा इकट्ठा किया गया है, उसी को लेकर सारा विवाद है। ऐसा आरोप है कि इस वजह से गोपनीयता का उल्लंघन किया गया है। अब एलजी सचिवालय

की तरफ से पुलिस कमिश्नर से कहा गया है कि उन लोगों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाए जिन्होंने लाभ देने की आड़ में गोपनीयता का उल्लंघन किया। एलजी ऑफिस से पुलिस आयुक्त को कुल 3 नोटिस दिए गए हैं। पहला नोटिस आम आदमी पार्टी को लेकर है जिसने महिला मतदाता को 2100 देने की घोषणा की है। दूसरा नोट इस बात को लेकर है कि कांग्रेस के प्रस्तावित उम्मीदवारों के घर पर पंजाब की खुफिया अधिकारी मौजूद रहे हैं। तीसरा नोट इस बात को लेकर है कि पंजाब के कई इलाकों से दिल्ली में पैसा ट्रांसफर किया जा रहा है। अब एलजी के इस जांच के आदेश के बाद आम आदमी पार्टी आगबबूला हो गई है।

पेसा कानून के समस्त दावों का समय-सीमा में करें निराकरण - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

*** धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान में हो शत-प्रतिशत सेचुरेशन**

*** जनजातीय कार्य विभाग में पेसा सेल गठित करने पर सहमति**

*** तेंदूपत्ता से जुड़े व्यवसायों को प्रदेश में प्रोत्साहित किया जाए**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पेसा कानून में प्रस्तुत समस्त दावों का निराकरण समय-सीमा निर्धारित कर प्राथमिकता पर किया जाए, आगामी कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस में इसकी समीक्षा की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पेसा अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जनजातीय कार्य विभाग में पेसा सेल गठित करने पर सहमति प्रदान की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशा के अनुरूप धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत विभिन्न हितग्राहीमूलक योजनाओं में समस्त पात्र भाई-बहनों का शत-प्रतिशत सेचुरेशन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश तेंदूपत्ते का बड़ा उत्पादक है, लेकिन इसका व्यावसायिक उपयोग अन्य राज्यों में होता है। तेंदूपत्ता संग्राहकों और इससे जुड़े विभिन्न व्यवसायों को प्रदेश में ही प्रोत्साहित करने एवं जनजातीय भाई-बहनों को इसके लाभ दिलवाने के लिए रणनीति बनाई जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में वन अधिकार अधिनियम और पेसा कानून के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए गठित टास्क फोर्स की कार्यकारी समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने पर दिए गए दिशा-निर्देश-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने के लिए राज्य शासन द्वारा जारी किए गए नोटिफिकेशन अनुसार ग्रामवासियों को रिकार्ड ऑफ राइट्स शीघ्र प्रदानकिए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जिला स्तर पर वन, राजस्व और जनजातीय कार्य विभाग के अधिकारी समन्वय से कार्य करें। प्रदेश में विद्यमान 925 वन ग्रामों में से 827 को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया है। इनमें से 792 को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित कर अब तक 790 ग्रामों का गजट नोटिफिकेशन जारी किया जा चुका है।

जीवन स्तर में सुधार और वन क्षेत्रों का संरक्षण सर्वोच्च प्राथमिकता-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय भाई-बहनों के जीवन स्तर में सुधार और वन क्षेत्रों के संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। सामुदायिक वन संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन में स्थानीय निवासियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए, इसके साथ ही सामाजिक संस्थाओं को जोड़ते हुए गतिविधियों का विस्तार किया जाए। बैठक में मध्यप्रदेश वन अधिकार अनिधियम के प्रावधानों और उसके क्रियान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा हुई। साथ ही कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में विधि विशेषज्ञ डॉ. मिलिंद दांडेकर, विषय विशेषज्ञ डॉ. शरद लेले, श्री मिलिंद थत्ते, पूर्व विधायक श्री भगत सिंह नेताम, श्री राम दांगोरे, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य श्री गुलशन बामरा सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

एम्स में समय से दो महीने पहले जन्मे शिशु को मिला नया जीवन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान ने एक बार फिर चिकित्सा अनुसंधान, नवाचार और स्वस्थ्य देखभाल के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता को साबित किया है। हाल ही में, संस्थान में निर्धारित समय से दो महीने पूर्व जन्मे एक नवजात शिशु ने अनुकरणीय चिकित्सा देखभाल और एक माँ के अटूट समर्पण के माध्यम से महत्वपूर्ण बाधाओं को पार किया। यह बच्ची जून 2024 में गर्भावस्था के केवल तीसवें सप्ताह में पैदा हुई थी, और उसका जन्म वजन मात्र 710 ग्राम था, जिसे 'अत्यंत कम जन्म वजन ' की श्रेणी में रखा जाता है। मां को उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था जटिलताओं, जिनमें ओलिगोहाइड्रामनिओस (गर्भावस्था के दौरान शिशु के आस-पास एमनियोटिक द्रव की मात्रा कम होने की स्थिति, जिसमें शिशु के चारों ओर पानी जैसा तरल कम हो जाता है) और डॉप्लर प्रवाह का अभाव शामिल था, के कारण प्रसव की आवश्यकता पड़ी, जिसके परिणामस्वरूप तत्काल सिजेरियन ऑपरेशन किया गया। बच्ची को नवजात गहन देखभाल इकाई (एनआईसीयू) में दो महीने तक विशेषज्ञों की देखरेख में गहन चिकित्सा दी गई। उसे केवल मां के दूध पर पोषण दिया गया और हड्डियों के स्वास्थ्य को मजबूत करने के लिए कैल्शियम टॉनिक भी दिया गया। छह महीने की आयु में, शिशु ने असाधारण प्रगति दिखाई है। उसका वजन 4.9 किलोग्राम हो गया है।

प्रो. सिंह ने इस उपलब्धि के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा- ÷यह मामला उन्नत चिकित्सा देखभाल, मातृ समर्पण और मां के दूध के अतुलनीय लाभों का प्रतीक है।

एम्स भोपाल में, हम उच्च जोखिम वाले नवजातों के लिए उच्चतम मानकों की देखभाल प्रदान करने और हर चुनौती में परिवारों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सफलता कहानी व्यापक एनआईसीयू देखभाल, एनआईसीयू नर्सों की समर्पित सेवाओं और मां के दूध द्वारा प्रदान किए गए जीवनदायी पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है।

विज्ञान को 'अज्ञात से ज्ञात की ओर यात्रा': डॉ सुनील चतुर्वेदी

भोपाल। भोपाल में आयोजित 11वें विज्ञान मेले का दूसरा दिन ज्ञान, संवाद, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और नवाचारों से परिपूर्ण रहा। इस कार्यक्रम की शुरुआत विद्यार्थी संवाद सत्र के साथ हुई। जिसमे मुख्य वक्ता डॉ. सुनील चतुर्वेदी थे । इस सत्र का मुख्य उद्देश्य छात्रों और वैज्ञानिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करना था। डॉ. सुनील चतुर्वेदी ने विज्ञान को रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़ते हुए छात्रों को बताया कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी दैनिक जीवनचर्या का अभिन्न हिस्सा है। उन्होंने विज्ञान को 'अज्ञात से ज्ञात की ओर यात्रा' के रूप में परिभाषित किया । छात्रों ने विज्ञान से जुड़े कई रोचक सवाल पूछे, जिनका डॉ. चतुर्वेदी ने सरल और सटीक भाषा में उत्तर दिया।

सत्र के दौरान भूमिगत जल संरक्षण पर विशेष चर्चा हुई, जिसमें डॉ. चतुर्वेदी ने अपने शोध कार्यों का अनुभव साझा किया। उन्होंने छात्रों को यह समझाया कि विज्ञान केवल तथ्य नहीं है, बल्कि यह एक दृष्टिकोण है, जो हमें समस्याओं को हल करने की दिशा में प्रेरित करते हैं। रविंद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के नाट्य विद्यालय के छात्रों द्वारा 'साइकिल की चेन' नामक नुक्कड़ नाटक का मंचन हुआ। इस नाटक में स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, समाज कल्याण और विज्ञान से जुड़े मुद्दों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया। नाटक में संगीत और संवाद का अत्यंत सुंदर संयोजन था, जिसने उपस्थित दर्शकों को सोचने पर मजबूर कर दिया।

विशेष व्याख्यान सत्र-मेले के अंतर्गत बाबूलाल गौर महाविद्यालय भोपाल में एन आई एफ के वैज्ञानिक डॉ. विवेक कुमार ने 'ग्रासरूट इनोवेशन्स की स्काउटिंग और डॉक्यूमेंटेशन' पर एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन) की भूमिका को स्पष्ट करते हुए बताया कि यह संगठन नवप्रवर्तकों को न केवल तकनीकी बल्कि आर्थिक सहायता भी प्रदान करता है। उन्होंने रोशनलाल विक्रम जैसे नवप्रवर्तकों के उदाहरण देकर छात्रों को प्रेरित किया। रोशनलाल ने गन्ना खेतों में जल समस्या के समाधान हेतु एक महत्वपूर्ण तकनीक विकसित की है।

शिक्षक कार्यशाला-कार्यक्रम के तीसरे सत्र में विज्ञान शिक्षक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में शिक्षकों को विज्ञान शिक्षा के नए तरीकों से अवगत कराया गया। इस सत्र में विशेषज्ञ संजय कौरव ने बताया कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे छात्रों की दैनिक जीवन की समस्याओं से जोड़ना चाहिए। एक और विशेषज्ञ डॉ. रवि कुमार ने कार्यशाला में विज्ञान को रुचिकर बनाने के व्यावहारिक तरीकों पर जोर दिया। उन्होंने गणित और विज्ञान को इतिहास और संस्कृति से जोड़कर पढ़ाने के महत्व को विज्ञान मेले में छात्रों और कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा 150 से अधिक वैज्ञानिक मॉडल प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम में एक विशेष सत्र में आदिवासी समुदायों की लौह अयस्क गलाने की परंपरागत तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन सभी के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक और रोचक रहा। समापन सत्र में डॉ. अमोघ गुप्ता ने विज्ञान को भारतीय संस्कृति से जोड़ते हुए कहा कि विज्ञान केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक विचारधारा है, जो हमारे जीवन को बेहतर बनाती है।

भारी तनाव के बीच भारत से चावल खरीदेगा बांग्लादेश

● 27 हजार टन की पहली खेप चटगांव बंदरगाह पहुंची

ढाका (एजेंसी)। भारत और बांग्लादेश में लगातार बढ़ती तल्खी के बाद भी व्यापार जारी है।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने भारत से चावल इंपोर्ट करना शुरू कर दिया है। बांग्लादेश ने भारत से 2 लाख टन चावल खरीदने का फैसला किया है। शुक्रवार को 27 हजार टन चावल की पहली खेप बांग्लादेश के चटगांव पहुंच गई है। बांग्लादेश के एक फूड अधिकारी ने न्यूज एजेंसी को बताया कि इस वक्त बांग्लादेश में चावल की कोई कमी नहीं है। हालांकि, हाल ही में आई भीषण बाढ़ के कारण सरकार ने भविष्य में संकट से बचने के लिए चावल इंपोर्ट करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा- बांग्लादेश की अंतरिम सरकार 2 लाख टन उबले चावल के अलावा टेंडर के जरिए भारत से 1 लाख टन चावल का इंपोर्ट करेगी। अधिकारी ने कहा- टेंडर के अलावा हमारा प्लान सरकार से गवर्नमेंट टू गवर्नमेंट लेवल पर भारत से और ज्यादा चावल इंपोर्ट करने का है।

नीतिश कुमार चले दिल्ली, सेट करेंगे आगे का प्लान!

'ऑफर पॉलिटिक्स' के बीच फिर खेला करेंगे बिहार के सीएम

पटना (एजेंसी)। सियासी सरगर्मी के बीच बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार कल रविवार को दिल्ली जा रहे हैं। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि वे कुछ राजनीतिक नेताओं से भी मुलाकात कर सकते हैं। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के परिवार और बीजेपी नेताओं के नाम शामिल हैं। नीतिश कुमार का यह दौरा ऐसे समय हो रहा है जब बिहार की राजनीति में हलचल तेज है। बीजेपी

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के परिवार से मुलाकात की संभावना

और जेडीयू के बीच तल्खी की खबरें आ रही हैं। इस बीच आरजेडी ने भी नीतिश कुमार को महागठबंधन में शामिल होने का न्यौता दिया है। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार रविवार को दिल्ली में अपना रुटीन चेकअप करवाएंगे। सीएम सचिवालय के अनुसार, यह एक दिन का दौरा होगा। वे शाम तक पटना लौट आएंगे। हालांकि, इस दौरान कुछ राजनीतिक भेंट संभव है, इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। नीतिश कुमार पहले

भी स्वास्थ्य जांच के लिए दिल्ली जा चुके हैं, खासकर आंखों की जांच के लिए। यही कारण है कि यह दौरा स्वास्थ्य जांच के लिए बताया जा रहा है। दिल्ली में नीतिश कुमार पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के परिवार से मिल सकते हैं। इसके अलावा बीजेपी नेताओं से भी मुलाकात की संभावना है।

हालांकि, इन मुलाकातों को लेकर अभी कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राजनीतिक हलकों में नीतिश कुमार के दिल्ली दौरे को लेकर अभी से ही मायने निकाले जा रहे हैं। दरअसल, इस वक्त बिहार की राजनीति गरमाई हुई है। बीजेपी और जेडीयू के बीच तनातनी की खबरें हैं। उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा के एक बयान पर जेडीयू ने तीखी प्रतिक्रिया दी थी। विजय कुमार सिन्हा ने बीजेपी के मुख्यमंत्री की इच्छा जताई थी। हालांकि, बाद में उन्होंने अपने बयान से यू-टर्न ले लिया। इधर, विधायक भाई वीरेंद्र ने नीतिश से महागठबंधन में शामिल होने की अपील की है। ऐसे में नीतिश कुमार की दिल्ली यात्रा को काफी अहम माना जा रहा है। नीतिश कुमार बिहार में प्रगति यात्रा कर रहे थे।

श्रीनगर में रोड, रेलवे ट्रैक और रनवे पर जमी कई इंच बर्फ

हाईवे पर फंसे 2000 लोग, फ्लाइट्स और ट्रेनें भी कैंसल

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में लगातार बर्फबारी हो रही है। सड़क पर अत्यधिक फिसलन से पीर पंजाल सुरंग और श्रीनगर शहर के बीच सैकड़ों वाहन अटके पड़े हैं। भारी बर्फबारी और शून्य से नीचे के तापमान के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग पर बर्फ की मोटी चादर जम गई। जिसकी वजह से हाईवे पर गाड़ियां कई घंटों तक सुरंग के अंदर फंसी रहीं। स्थानीय अधिकारी सड़क पर फंसी हुई गाड़ियों को निकालने के लिए काफी प्रयास कर रहे थे, लेकिन बर्फबारी के कारण वाहन लगातार कई घंटों तक फंसे रहे। कुलगाम और अनंतनाग जिलों में वरिष्ठ नागरिक और पुलिस अधिकारी बर्फ हटाने वाली मशीनों के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर फंसे वाहनों को निकालने के लिए पहुंचे। शनिवार सुबह तक यातायात पूरी तरह से बहाल नहीं हो सका। श्रीनगर शहर और अन्य जिलों जैसे बडगाम, गांदरबल, बांदीपोरा, बारामुल्ला, कुपवाड़ा, पुलवामा, अनंतनाग, कुलगाम और शोपियां में भारी बर्फबारी के कारण सभी सड़कें बंद हो गईं। बर्फ हटाने वाली मशीनों को सुबह भेजा गया ताकि यातायात बहाल किया जा सके।

भोपाल-खंडवा में बारिश के साथ ओले गिरे,24 घंटे में 42 जिलों में पानी बरसा

भिंड में हवा की रफ्तार 62 किमी प्रति घंटा रही

भोपाल/इंदौर/उज्जैन/जबलपुर (नप्र) । मध्यप्रदेश में शनिवार को लगातार दूसरे दिन मावठा गिरा। भोपाल, इंदौर, सीहोर, बड़वानी, रायसेन, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, श्योपुर, खंडवा, उमरिया और रीवा समेत कई जिलों में बारिश हुई। कई जगहों पर ओले भी गिरे। जिससे फसलों को नुकसान होने की खबरें आई हैं।

बारिश के चलते जबलपुर, रीवा, रायसेन, खंडवा और उमरिया समेत कई शहरों की मंडियों में रखे अनाज भीग गए। इससे पहले शुक्रवार को भोपाल,इंदौर और उज्जैन संभाग के लगभग सभी जिलों में बारिश हुई थी।बारिश की वजह से रायसेन के दशहरा मैदान में ट्रैक्टर ट्रॉलियों में धान लेकर आए किसान परेशान रहे। रात भर किसान तिरपाल पकड़कर बैठे रहे, ताकि धान को खराब होने से बचा सकें।

20 से ज्यादा जिलों में बारिश-ओले का अलर्ट-मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में नर्मदापुरम के पचमढ़ी, नरसिंहपुर, बैतूल, छिंदवाड़ा, सतना, पन्ना, सिवनी, दमोह, पांढुर्णा और जबलपुर में ओले गिरने का अलर्ट जारी किया है।

परिक्रमा

मिशन मोदी की राह पर रोड मैप बनाती मोहन सरकार

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक

मध्यप्रदेश की मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार भी प्रधानमत्री नरेंद्र मोदी की राह पर चलने का मन बना चुकी है और इसके लिए मंथन कर रोड मैप भी तैयार कर लिया गया है। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री मोदी के गरीब, युवा, नारी व किसान कल्याण के कार्यों को मिशन की राह पर पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लेती नजर आ रही है। मुख्यमंत्री डा. यादव की अध्यक्षता में लगभग पांच घंटे तक मंत्रियों व अधिकारियों ने मंथन कर रोड मैप तैयार किया है। इसके तहत रोजगार देने वाले उद्योगों पर फोकस देने के साथ ही साथ किसानों की आमदनी कैसे बढ़े और उन्हें पशुपालन व उद्यानिकी से जोड़ने, युवाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण देने व दिलाने के साथ ही महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर विचार विमर्श भी किया गया। जो चार मिशन तैयार किए गए हैं उनका क्रियान्वयन भी विभागों के समन्वय से होगा। अगले साल 2025 की जनवरी के दूसरे पखवाड़े में शहडोल में रीजनल इनवेस्टर समिट तो फरवरी में ग्लोबल इनवेस्मेंटर समिट का आयोजन होगा। मंत्रियों को उनकी जिम्मेदारी का अहसास कराते हुए उनसे कहा गया है कि वे विभागों में समीक्षा करके योजनाओं का श त-प्रतिशत लाभ पात्रों को दिलाने की दिशा में कारगर प्रयास करेंगे। इस प्रकार मोहन यादव मध्यप्रदेश के विकास को पंख लगाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं ताकि वह इन क्षेत्रों में नई ऊंचाई पाने के लिए छलांग लगा सकें।

अक्सर यह देखा गया है कि बड़ी आकर्षक व लोक-लुभावन घोषणायें हो जाती है और योजनायें बन जाती हैं लेकिन क्रियान्वयन में उतनी सजगता व गति नहीं होती कि उसका लाभ वांछित रुप से समाज में अंतिम पंक्ति तक खड़े उस व्यक्ति को मिले जिसके लिए योजनायें बनाई गयी हैं। यह जमाना युवाओं और तरुणाई का है और उनमें कुछ कर दिखाने का माद्दा भी होता है इसलिए उन्हें सामाजिक पहल का हिस्सा बनाने के प्रयास भी तेज होंगे। स्वामी विवेकानंद युवा षक्ति मिशन में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के लिए क्षमता, संवर्धन पर पूरा ध्यान केंद्रित किया जायेगा। 15 से 29 वर्ष तक के युवाओं को सामाजिक पहल का हिस्सा बनाने का भी काम होगा। महिलाओं, दिव्यांग, युवाओं, किसानों और आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग पर विशेष ध्यान केंद्रित रहेगा। गरीब कल्याण मिशन में अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग पर विशेष केंद्रित रहेगा। चिन्हित योजनाओं का लाभ पात्रों को दिलाने के उद्देश्य से आजीविका संवर्धन व संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ किया जायेगा। नारी सशक्तीकरण में आर्थिक विकास और सुरक्षा पर विषेष ध्यान दिया जायेगा। सरकारी सेवाओं में महिलाओं को अवसर उपलब्ध कराने के लिए समाज में आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के भी प्रयास होंगे ताकि हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। महिला और बाल विकास के प्रति सकारात्मक व्यवहार के लिए पुरुष संवेदनशीलता बढ़ाना और जागरुकता फैलाना भी मिशन का उद्देश्य होगा।

किसानों की आय बढ़ाने के लिए पशुपालन के साथ ही उद्यानिकी फसलों का विस्तार किया जायेगा। दुग्ध उत्पादन बढ़ाकर आमदनी बढ़ाई जायेगी तो उद्यानिकी फसलों के जरिये खेती को लाभ का धंधा बनाया जायेगा और प्रसंस्करण की सुविधाओं का भी विस्तार किया जायेगा। डॉ. यादव का मानना है कि हर गरीब के जीवन स्तर में सुधार लाना उनकी सरकार की प्राथमिकता है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए मिशन मोड में काम किया जायेगा। प्रदेश में बजट दोगुना किया जायेगा और 10 से 12 लाख की आबादी वाले शहरों से सटी हुई ग्राम पंचायतों को मिलाकर नगर परिषद बनायेगे ताकि तेजी से विकास हो सके। रेडीमेड गारमेंटस जैसे अधिक रोजगार देने वाले सक्षम उद्योगों की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जायेगा। हाल ही में विधानसभा के सत्र में जो अनुपूरक अनुमान यानी सप्लीमेंटरी बजट पारित किया गया था उसको राज्यपाल मंगुभाई पटेल की हरी झंडी मिल गयी है और 22460 करोड़ रुपये व्यय कर योजनाओं को गति दी जायेगी तथा रुके हुए काम तेजी से पूरे होंगे। इसमें सड़क व पुलिया निर्माण के साथ ही साथ नलजल जीवन मिशन योजना का ध्यान रखा गया है। राज्य में उद्योग-धंधे की चिंता भी सरकार ने की है। वहीं दूसरी ओर यह भी प्रयास किया गया है कि यहां अधिक से अधिक निवेश आये और इसके लिए बजट में राशि का प्रावधान किया गया है।

प्रदेश सरकार का फोकस उद्योग एवं निवेश प्रोत्साहन पर है, इसी को ध्यान में रखते हुए एमएसएमई प्रोत्साहन व्यवसाय निवेश और संवर्धन और सुविधा प्रदाय योजना के लिए 40 करोड़ रुपये, मुख्यमंत्री उद्यम विकास योजना के लिए 50 करोड़ और औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन योजना के लिए 250 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। ऊर्जा के लिए 8763 करोड़ रुपये और नगरीय विकास एवं आवास के लिये 859 करोड़ रुपये, महिलाओं एवं बाल विकास के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। सप्लीमेंटरी बजट में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की गेमचेंजर लाडली बहना योजना के लिए 465 करोड़ रुपये, लाडली लक्ष्मी योजना के लिए 85 करोड़ रुपये मिले हैं। यह राशि मुख्य बजट से अतिरिक्त होगी। इसी तरह सरकार ने किसानों का भी विशेष ध्यान रखा है। अटल कृषि योजना के लिए 8483 करोड़ रुपये तथा टेरिफ अनुमान पर 280 करोड़ का प्रावधान है, जबकि नर्मदा घाटी विकास विभाग के अंतर्गत सिंचाई परियोजनाओं के लिए 2125 करोड़ रुपये एवं अन्य सिंचाई परियोजनाओं के लिए 1593 करोड़ का प्रावधान हे। जलजीवन मिशन के लिए नेशनल रुरल ड्रिंकिंग वाटर मिशन के लिए 3420 करोड़ रुपये और ग्रामीण नलजल योजना के लिए 54 करोड़ तथा ग्रामीण जलप्रदाय योजनाओं के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

और यह भी.....!

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आदेश दिया है कि अब कतार में मंडियों में अन्नदाता नजर नहीं आयेंगे और नये साल से किसान स्वयं अपना ई-पास बना सकेंगे। डॉ. यादव ने निर्देश दिया है कि मंडियों में ई-पास से प्रवेश करने की व्यवस्था लागू करें। अभी तक प्रदेश की 42 मंडियों में ई-पास से किसानों को यह सुविधा दी गयी है कि वह मोबाइल एप से स्वयं पर्ची बना सकें। 41 मंडियों में यह व्यवस्था नए साल के आगाज के साथ चालू हो जायेगी। एक अप्रैल से 259 मंडियां ई-मंडी के रुप में काम करेंगी। समर्थन मूल्य पर खरीदी तथा उठाव में देरी होने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अधिकारियों की जमकर क्लास लगाई और कहा कि नोडल एजेंसी नागरिक आपूर्ति निगम के भरोसे न रहें। कमिश्नर और कलेक्टर से निगरानी करायें ताकि उठाव में देरी न हो। असल में यह भी शिकायतें आई हैं कि प्रदेश के कुछ संभागों में खरीदी के बाद जमा होने वाली धान के उठाव में देरी हो रही है जबकि मौसम खराब है। केंद्रों के बाहर पड़ी धान कुछ जगह भीग भी गई है।

युग पुरुष आश्रम की मान्यता रद्द

86 बच्चे उज्जैन शिफ्ट, 10 बच्चों की मौत के बाद मिली थीं खामियां

इंदौर (नप्र)। पंचकुइया स्थित युगपुरुष धाम में चल रहे दिव्यांगों के बौद्धिक विकास केंद्र की मान्यता जिला प्रशासन ने अंतत-रद्द कर दी है। जुलाई में इस केंद्र में 10 से ज्यादा बच्चों की एक एक कर मौत हुई थी। वहीं 60 से ज्यादा बच्चे बीमार हो गए थे। जांच में कई तरह की खामियां भी सामने आई थी। मामले में उच्च स्तरीय जांच कमेटी ने रिपोर्ट में बताया कि बच्चों की मौत का सिलसिला जून के तीसरे हफ्ते में शुरू हो गया था, लेकिन इसे छिपाया गया था। इलाज के दौरान पता चला था कि वे डिहाइड्रेशन और कुपोषण के शिकार थे। कुछ बच्चों के शव को बिना पोस्टमार्टम किए ही परिजनों को सौंप दिया गया। इसके बाद संस्था के अध्यक्ष, सचिव और संचालिका को हटाने के आदेश जारी किए गए थे। कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि मामले में आश्रम को नोटिस दिया था। प्रबंधन में भी बदलाव किया गया था। फिर सहमति के बाद गुरुवार से आश्रम के 86 दिव्यांग (34 बालक और 52 बालिकाएं) बच्चों को उज्जैन के सेवाधाम आश्रम में शिफ्ट करने की प्रक्रिया जारी थी, जो पूरी हो चुकी है। उज्जैन के आश्रम के संस्थापक सुधीर भाई गोयल ने बताया कि प्रदेश के इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में 86 दिव्यांग और बहु-दिव्यांग बच्चे संस्था में स्थानांतरित होकर आए हैं।

बहन के दोस्त के पेट में चाकू मारा, घायल

इंदौर में भीड़ ने आरोपी को पकड़कर पीटा, फिर पुलिस के हवाले किया

इंदौर (नप्र)। इंदौर के एमआईजी इलाके में शुक्रवार रात एक युवक ने दूसरे युवक को चाकू मारकर घायल कर दिया। युवक को गंभीर हालत में मेंदाता अस्पताल में भर्ती कराया गया है। भीड़ ने आरोपी युवक को पकड़कर पीटने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया। टीआई सौबी सिंह के मुताबिक, नंदानगर नगर में रहने वाले पीयूष वर्मा पर लविश बरोड ने चाकू से हमला किया है। घटना संजय नगर के पास चर्च की है। यहां पर लविश ने अपनी बहन के साथ था। उसने पीयुष को मिलने बुलाया था। दोनों के बीच बातचीत हो रही थी। इतने में लविश ने पीयूष के पेट में चाकू मार दिया। घटना में पीयूष के दोस्त जय रावत को भी पैर में चाकू लगा है। उसे एमवाय अस्पताल ले जाया गया।बताया जा रहा है कि पीयूष और लविश की बहन दोस्त हैं।

अमेरिका, इटली, पेरु के तीन कपल को लगी हल्दी-मेहंदी

ऐसा इंदौर में पहली बार, शाम को महिला संगीत; आज उज्जैन में लेंगे सात फेरे

इंदौर (नप्र)। इटली, अमेरिका और पेरु से इंदौर आए तीन कपल के शादी की रस्म आज से शुरू हुई। शनिवार सुबह सभी को मेंहदी और फिर हल्दी की रस्म निभाई गई। इस दौरान वैदिक मंत्रोच्चार भी हुआ। साथ ही बैंड-बाजे और ढोल भी बजाए गए। हल्दी-मेंहदी के बाद शाम को महिला संगीत का आयोजन है। तीनों कपल कल यानी रविवार को उज्जैन के निनोरा स्थित परमानंद योग आश्रम में सात फेरे लेंगे। शादी की सभी रस्में भारतीय वैदिक पद्धति से होगी। तीनों कपल इंदौर के परमानंद इंस्टिट्यूट ऑफ योगा साइंस एण्ड रिसर्च इंडिया में योग प्रशिक्षण लेने आए थे। यहां आने के बाद सभी ने वैदिक पद्धति से हिंदू नाम भी अपनाए। अमेरिका के इयन और पेरु से आई गेब्रियल ने कहा कि यहां हमने योग भी सीखा, हमें नया जीवन मिला है। हमें यहां आकर जीवन के नए आयाम सीखने को मिले हैं। शादी कर रहे तीनों के नाम डारियो (विष्णु आनंद) संग मार्टिना (मां मंगलानंद), इअन (आचार्य रामदास आनंद) संग गेब्रियला (मां समानंद) और मॉरजिओ (प्रकाशानंद) संग नेल्मास(मां नित्यानंद) हैं।

दरअसल तीनों कपल ने इंदौर मे रहकर योग सीखा और फिर यहीं भारतीय परंपराओं के अनुसार शादी करने का फैसला लिया। तीनों कपल इंदौर से 3 जनवरी को इटली लौट जाएंगे। परमानंद योग केंद्र के प्रमुख डॉ. ओमानंद ने बताया कि भारतीय परंपरा में शादी अनुबंध नहीं है। इटली में 60 प्रतिशत से ज्यादा शादियां टूट जाती है। जब इन सभी ने भारतीय परंपराओं के साथ वैवाहिक जीवन जी रहे लोगों को देखा तो ये काफी प्रभावित हुए। योग केंद्र के प्रमुख डॉ. ओमानंद के साथ इटली के कपल मार्टिना और दआरियों। मार्टिना ने बताया कि यहां की हल्दी और मेहंदी की रस्म काफी अच्छी है। ऐसे रिवाज पूरी दुनिया में कहीं नहीं हैं। इंस्टिट्यूट में वे योग गुरुओं से समय-समय पर योग की कई क्रियाओं को समझने के साथ प्रैक्टिस करने लगे। भारतीय परम्परा, सनातन धर्म, पूजा, पाठ, त्यौहार, वैदिक पद्धति, विवाह पद्धति आदि को लेकर गहनता से अध्ययन किया। यहीं इन्होंने एक-दूसरे को ठीक से जाना और जिंदगीभर साथ रहने के लिए दाम्पत्य जीवन में बंधने का निर्णय लिया। रोचक यह कि इन्होंने खुद अपने नाम हिन्दू रखने के लिए सहमति दी और यहां इन सभी को छह हिन्दू नाम दिए गए। सभी ने परिवार से अनुमति लेने के बाद ही शादी करना तय किया।

इंदौर में महिला को जबरन शराब पिलाकर दुष्कर्म

सहेली ने वीडियो बनाया, मदद के बहाने होटल संचालक ने की वारदात

इंदौर (नप्र)। इंदौर में एक महिला से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी और उसकी महिला मित्र ने पीड़िता को जबरदस्ती शराब पिलाई। रेप किया। जिसका वीडियो भी बनाया गया। फिर संबंध बनाने के लिए ब्लैकमेल करने लगा। इसके बाद पीड़िता ने अपने एक रिश्तेदार को पूरी घटना बताई। तब विजयनगर थाने में शिकायत की। 34 साल की महिला की शिकायत पर आरोपी पुरुषोत्तम उपाध्याय पर रेप, ब्लैक मेलिंग और धमकाने की धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई है। पुरुषोत्तम रेस्टोरेंट का संचालन करता है। महिला के पति की मौत हो चुकी है। इसके बाद मदद करने के बहाने पुरुषोत्तम ने उससे संपर्क बढ़ाया था। पीड़िता ने शिकायत में पुलिस को बताया-साल भर पहले मेरी गुजरात की एक दोस्त इंदौर आई थी। उसने पुरुषोत्तम से पहचान कराई। पुरुषोत्तम को पता लगा कि मेरे पति नहीं है तो उसने कहा कि तुम्हारे बच्चे छोटे हैं। अगर किसी तरह की मदद करूं तो इंकार मत करना। इसके बाद बार कोड लेकर उसने कई छोटी-मोटी मदद की। वह हर माह बच्चों को कपड़े और चाकलेट वगैरह दिलाने की बात करते हुए दो-तीन हजार रुपए डाल देता था।

कई बार साथ ले गया, इसलिए भरोसा आ गया- पीड़िता ने बताया कि पुरुषोत्तम कई बार रेस्टोरेंट और अन्य जगह ले गया। लेकिन, कभी गलत नहीं किया। इसलिए उस पर विश्वास हो गया। कुछ दिन पहले पुरुषोत्तम ने गुजरात की दोस्त के साथ रेडिसन के सामने एक होटल पर खाने की बात कही। कहा कि वहां से मूवी देखने चलेंगे। मैं अपनी सहेली के साथ पहुंची। वहां कमरे में पुरुषोत्तम और सहेली शराब पीने लगे। काफी देर हो गई। मैंने घर का कहकर मूवी देखने से इंकार कर दिया। उठकर जाने लगी तो सहेली गुस्सा हो गई। उसने फोन छीन लिया। कहने लगी कि दोस्त को एक साल से लटकाया हुआ है। इतना खर्च करता है। लेकिन, उसने छूने तक नहीं दिया।

जबरन नशा करवाया, सहेली ने वीडियो बनाया- इसके बाद अंकिता और पुरुषोत्तम ने जबरदस्ती नशा करवाया। पुरुषोत्तम ने यहां सबंध बनाए। फिर सहेली ने वीडियो बनाया। दोनों ने कहा कि अब यह किसी से कुछ कहने लायक नहीं है। इसके बाद रात में घर छोड़कर चले गए। काफी परेशान होने के बाद दोस्त से इस बारे में बात की।

इंदौर में कारोबारी ने किया सुसाइड

ऑनलाइन सट्टे में डेढ़ करोड़ हारने की बात आई सामने; पुलिस ने कहा- कर्ज था

इंदौर (नप्र)। इंदौर में एक कारोबारी ने सुसाइड कर लिया। सुदामा नगर निवासी राहुल गुप्ता (40) का शव शुक्रवार रात पत्नी की चुन्नी से लटका मिला। राहुल को सबसे पहले पत्नी ने ही देखा। फिर 10 साल की बेटी के साथ मिलकर पत्नी ने उन्हें नीचे उतारा।झ बाद में पड़ोसियों की मदद से रात 12 बजे अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने राहुल को मृत घोषित कर दिया। राहुल की तीन बेटियां और एक बेटा है।

वह मूल रूप से भिंड के अंबाह का रहने वाला था। अन्न पूर्णा थाना पुलिस के मुताबिक-राहुल ऑनलाइन सट्टा खेलता था। वह कई बार हार चुका था। उस पर कर्ज होने की बात सामने आई है। कॉल डिटेल निकालकर जांच की जा रही है। अभी पत्नी और परिवार अभी बयान देने की स्थिति में नहीं हैं। बयान के बाद आगे की कार्रवाई होगी।

डेढ़ करोड़ हारा, पिता से भी लिए 50 लाख- दोस्तों ने बताया कि राहुल ऑनलाइन गेम में डेढ़ करोड़ रुपए हार गया था। इसकी खाना पूर्ति के लिए उसने पिताजी से 40 से 50 लाख रुपए उधार लिए थे।

पारिवारिक विवाद भी सामने आया- दोस्तों के मुताबिक वह बहन के ससुराल वालों से भी परेशान चल रहा था। बहन का पारिवारिक विवाद चल रहा है। वहीं, छोटे भाई की पत्नी 30 लाख रुपए के जेवर लेकर जा चुकी है। इसकी रिपोर्ट भी परिवार ने अक्टूबर माह में अन्न पूर्णा पुलिस से की थी।

इंदौर में गोली मारकर डॉक्टर की हत्या

इलाज के बहाने क्लीनिक आए थे तीन बदमाश; दवाई लेकर फिर लौटे और फायर कर दिया

इंदौर (नप्र)। इंदौर में बदमाशों ने शुक्रवार रात करीब 11 बजे होम्योपैथी डॉक्टर की गोली मारकर हत्या कर दी। राजेंद्र नगर पुलिस के मुताबिक, कुंदन नगर में रहने वाले डॉक्टर सुनील साहू (28) को बदमाशों ने क्लीनिक में घुसकर गोली मारी। वे कैंट रोड स्थित अपने घर पर ही जीवन धारा नाम से क्लीनिक चलाते थे। गोली लगने के बाद डॉक्टर को पहले संकल्प अस्पताल ले जाया गया। बाद में यहां से यूनिक अस्पताल रेफर किया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। एसीपी रुबीना मिज्वानी के मुताबिक डॉक्टर को बदमाशों ने एक गोली मारी है। वहीं, पहले बताया जा रहा था कि बदमाश नकाब में थे, लेकिन पुलिस का कहना है कि चेहरा पूरी तरह कवर नहीं था।

दवा लेकर निकले, फिर लौटे और गोली मार दी

जानकारी के मुताबिक तीन बदमाश सर्दी-जुकाम का इलाज कराने के बहाने क्लीनिक में आए थे। वे दवा लेकर बाहर निकले और कुछ ही मिनटों में चेहरे पर नकाब चढ़ाकर लौटे और डॉक्टर पर गोली चला दी। गोली उनके सीने में लगी। फौरन उन्हें पास के अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वे बच नहीं सके।

मीनेश अस्पताल में नौकरी करते थे डॉ. साहू

पुलिस के मुताबिक, डॉक्टर सुनील साहू मीनेश अस्पताल में नौकरी करते थे। शाम को वे कुंदन नगर में क्लीनिक चलाते थे। बदमाशों ने क्लीनिक पहुंचकर पर्ची कटाई, 450 रुपए फीस चुकाई और डॉक्टर को दिखाकर दवाई लेकर बाहर निकल आए। उस वक्त वार्ड बॉय के अलावा दो-तीन मरीज और थे।वारदात को अंजाम देने के बाद बदमाश बाइक से भाग निकले। शोर मचने पर आसपास के लोग मौके पर जमा हो गए।

रात के खाने में इंतजार कर रहा था परिवार

डॉ. साहू की शादी डेढ़ साल पहले ही सोनाली से हुई थी। बच्चे नहीं हैं। ससुर बाबूलाल सब्जी का कारोबार करते हैं। ससुर के मुताबिक घटना के समय वे और बेटी सोनाली परस्पर नगर स्थित घर पर ही थे। सुनील आमतौर पर 9.30 बजे तक घर आ जाते हैं, इसलिए वे खाने के लिए उनका इंतजार कर रहे थे। इसी बीच सोनाली के पास खबर आई कि सुनील को किसी ने गोली मार दी है। शुरुआती जांच में डॉ. साहू का किसी से कोई विवाद सामने नहीं आया है। फिलहाल, पुलिस सभी एंगल पर जांच कर रही है।

फैक्ट्री मजदूर के मोबाइल से लगाया था कॉल

डॉक्टर साहू की हत्या के बाद रात से पुलिस की कई टीमें इस हत्याकांड को सुलझाने में लगी है। देर रात अफसरों ने वह नंबर निकाला है, जिससे डॉक्टर को कॉल कर क्लीनिक पर बुलाया गया था। जांच में वह नंबर किसी तिवारी नाम के व्यक्ति का निकला। पुलिस ने तिवारी से पूछताछ की तो उसने बताया, जब वह चाय की दुकान पर खड़ा था तब दो लोग उसके पास आए थे। एक युवक ने मोबाइल नहीं होने पर कॉल करने के लिए फोन मांगा। उन्होंने मोबाइल से डॉक्टर के नंबर पर कॉल किया था।

एक लड़का क्लीनिक के बाहर चक्कर लगाते रहा

डॉक्टर के कंपाउडर दीपक ने पुलिस को बताया, शाम 7-30 बजे डॉक्टर साहब का कॉल आया था। उन्होंने बताया था कि रात साढ़े नौ से दस बजे के बीच में एक पेशेंट आने वाला है। तुम क्लीनिक पहुंच जाना। रात में डॉक्टर करीब 10-30 बजे क्लीनिक पहुंचे। तभी दो लड़के आए। उन्होंने चेहरा ढंक रखा था। इलाज कराने वाले लड़के का चेहरा दिखा। इस दौरान एक लड़का बाहर चक्कर लगा रहा था। बाद में तीनों चले गए। कुछ देर बाद लड़के लौटे। उनके हाथ में तमंचे थे। उन्होंने धमकी देते हुए रुपए निकालने की बात कही। इस पर डॉक्टर साहब ने अपना पर्स और एटीएम दे दिया। मैंने भी अपना पर्स दे दिया। मुझे दीवार की तरफ मुंह रखने के लिए कहा।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

वर्तमान में हनुमान: जीवन विकास की मार्गदर्शिका

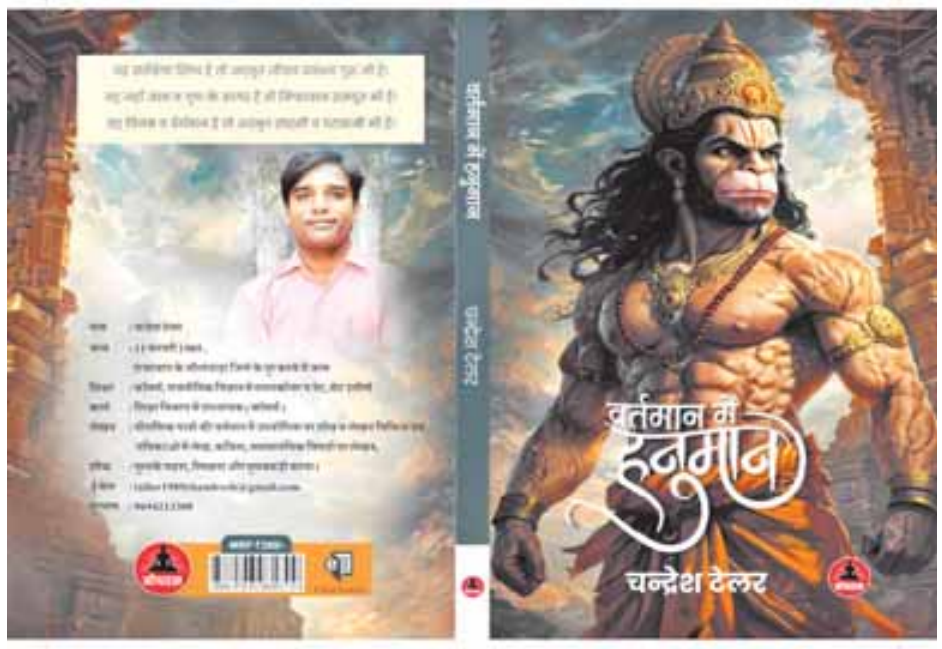

चन्द्रेश टेलर एक प्रतिभाशाली लेखक और विचारक हैं, जो साहित्य और अध्यात्म को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। उनकी लेखनी जीवन के गूढ़ सत्यों को सरलता से उजागर करती है। 'वर्तमान में हनुमान' में उन्होंने हनुमानजी के जीवनदर्शन को प्रबंधन, नेतृत्व और आत्म-विकास के आधुनिक आयामों से जोड़ा है। चन्द्रेश टेलर द्वारा रचित 'वर्तमान में हनुमान' एक ऐसी अद्वितीय कृति है, जो भगवान हनुमान के चरित्र और उनकी लीलाओं को आज के जीवन में प्रासंगिक बनाती है।

यह पुस्तक न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करती है, बल्कि प्रबंधन, नेतृत्व, कार्यकुशलता और जीवनशैली जैसे आधुनिक पहलुओं पर भी गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। लेखक ने सरल और संवादात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है, जो पुस्तक को हर आयु वर्ग के लिए रुचिकर और सुबोध बनाती है। तुलसीदासजी की चौपाइयों और महापुरुषों के उद्धरणों से सजी यह पुस्तक पौराणिकता और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय स्थापित करती है। भाषा में निहित साहित्यिक गहराई और हृदयस्पर्शी भाव पाठकों को पुस्तक से जोड़े रखते हैं।

पुस्तक का मुख्य उद्देश्य भगवान हनुमान के व्यक्तित्व को आधुनिक जीवन की चुनौतियों से जोड़ते हुए उनके गुणों को जीवन में आत्मसात करने पर जोर देना है। हनुमानजी के जीवन की घटनाओं, उनके साहस, समर्पण, नेतृत्व और मर्यादा के पालन को इस पुस्तक में इतनी खूबसूरती से उकेरा गया है कि हर पाठक के लिए यह व्यक्तिगत विकास का मार्गदर्शन बन जाती है।पुस्तक का शीर्षक आलेख 'वर्तमान में हनुमान' यह स्पष्ट करता है कि लेखक ने हनुमानजी के गुणों को केवल एक पौराणिक परिप्रेक्ष्य तक सीमित न रखकर उन्हें वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है। इस प्रयास में, लेखक ने तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों और दोहों का संदर्भ देकर हनुमानजी के गुणों की व्याख्या की है।

'गुरु या मेंटोर सँवारे जीवन' और 'समर्पण या अहंकार का त्याग'जैसे आलेख पाठकों को सिखाते हैं कि एक सफल व्यक्ति बनने के लिए हनुमानजी के नेतृत्व और समर्पण के गुणों को कैसे अपनाया जाए। लेखक बताते हैं कि हनुमानजी सिर्फ राम के भक्त नहीं, बल्कि एक कुशल प्रबंधक और नेतृत्वकर्ता भी थे। उनका 'राम काज लगि तव अवतारा' का जीवन-दर्शन हमें यह सिखाता है कि हर कार्य को पूरी निष्ठा और समर्पण से करना चाहिए। किसी भी संस्थान, कंपनी या समूह की सफलता उसके नेतृत्वकर्ता की कुशलता पर निर्भर करती है, और लेखक इस विचार को हनुमानजी के नेतृत्व गुणों से जोड़कर सरल और प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। 'वानराणामधीशं' का उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया गया है कि नेतृत्व केवल अधिकार नहीं, बल्कि सेवा और मर्यादा का प्रतीक होना चाहिए।

'रामकाज ही लक्ष्य' और 'भावनात्मक बौद्धिक कौशल' जैसे लेखों में लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि जीवन में सफलता पाने के लिए हनुमानजी के साहस और बुद्धिमत्ता को आत्मसात करना आवश्यक है। हनुमानजी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्चा आत्मविश्वास और साहस किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है। यह पुस्तक युवाओं को प्रेरित करती है कि वे अपने भीतर छिपे साहस और क्षमता को पहचानें और असंभव को संभव बनाने का पुरुषार्थ करें। पुस्तक के विभिन्न आलेख, जैसे 'सुनना भी एक कला है' और 'अद्भुत संवाद कौशल,' न केवल व्यक्तिगत विकास के व्यावहारिक सूत्र प्रदान करते हैं, बल्कि हनुमानजी की संवाद शैली और उनकी सुनने की क्षमता को आज के जीवन में कैसे उपयोगी बनाया जाए, इसका मार्ग भी दिखाते हैं। यह दृष्टिकोण पुस्तक को महज आध्यात्मिक ग्रंथ से आगे बढ़ाकर प्रेरक और व्यवहारिक मार्गदर्शिका का रूप देता है।

हनुमानजी के चरित्र के माध्यम से लेखक ने मर्यादा, समर्पण, लचीलापन और नेतृत्व जैसे मूल्यों को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। पुस्तक यह सिखाती है कि जीवन में केवल भौतिक सफलता ही महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि नैतिकता और मानवीय मूल्यों का पालन भी आवश्यक है। पुस्तक में लेखक ने हनुमानजी के गुणों को इतने विस्तार और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है कि यह हर पाठक को आत्मविश्लेषण करने पर मजबूर कर देती है। हालांकि, कुछ स्थानों पर आलेखों में अधिक गहराई और विस्तार की संभावना हो सकती थी।

'वर्तमान में हनुमान' न केवल आध्यात्मिक, बल्कि व्यावहारिक जीवन के लिए भी एक मार्गदर्शिका है। यह पुस्तक हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह जीवन के विविध पहलुओं को सरल और प्रेरक ढंग से प्रस्तुत करती है। चन्द्रेश टेलर ने अपने साहित्यिक अनुराग और अनूठे दृष्टिकोण से इसे एक ऐसी कृति बना दिया है, जो पाठकों को न केवल हनुमानजी की प्रेरणा से जोड़ती है, बल्कि उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह पुस्तक उन सभी के लिए अनिवार्य है, जो अपने जीवन में नेतृत्व, प्रबंधन, साहस और आत्मनिर्भरता के गुण विकसित करना चाहते हैं। 'वर्तमान में हनुमान' निस्संदेह आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संगम का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

पुस्तक-वर्तमान में हनुमान
लेखक- चन्द्रेश टेलर
प्रकाशन- बोधरस प्रकाशन, लखनऊ
मूल्य- 280 रुपये

कविता

तुम याद आने लगे

सीमा देवेन्द्र

आपके गीत होठों पे आने लगे
आप की तरह दिल में समाने लगे।

हमसफर बनके कितने चले साथ हम
वाकिए वो हमें अब सताने लगे।

जी रहे हैं तुम्हारे बिना जिंदगी
साथ गुजरे वो पल याद आने लगे।

ख्वाब में अब तो आने लगे हो सनम
सिर्फ जीने के अब ये बहाने लगे।

इतनी आसां नही थी डगर प्यार की
साथ चलने में कितने जमाने लगे।

कितने मोड़े थे पन्ने किताबों के जो
देख तस्वीर उनमें रुलाने लगे।

याद की कोई सीमा नही प्रियतम
गीत सा अब तुम्हें गुनगुनाने लगे।

सवेरा आए

कमलेश कुमार 'दीवान'

आप फिर साथ में आओ कि सवेरा आए
आप फिर हाथ बढ़ाओ कि सवेरा आए।

रात गहराई है,अंधेरे भी डराते हैं अब
तुम कोई बात सुनाओ कि सवेरा आए।

आपके साथ हैं यह साथ रहे जीवन भर
सभी को अपना बनाओ, कि सवेरा आए।

आप से काम काज और रहनुमाई भी है
काम में भी हाथ बटाओ कि सवेरा आए।

चलो फिर दूर तलक आएगी मंजिल अपनी
तुम अपनी बात बताओ कि सवेरा आए।

रूठे है कुछ छूट गए टूट रहे अपनों से
सभी को साथ में लाओ कि सवेरा आए।

जोड़कर हाथ सभी को नमन करते 'दीवान'
साथी तुम भी साथ निबाहो, कि सवेरा आए।

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

खुदकुशी

नवम्बर की आखिरी तारीख़। दोपहर का समय। दिन के यही कोई बारह बज रहे होंगे। घर से क़रीब पाँच-सात किलोमीटर की दूरी पर बड़े तालाब के किनारे स्थित बैंक में सेवाराम जी ''अभी मरा नहीं हूँ'' का प्रमाण पेश करने के लिए आटो में सवार होकर जा रहे थे। रास्ते में सड़क के बीच तमाशबीनों की भीड़ देखकर ड्रायवर आत्माराम ने आटो को धीरे से एक ओर लगाया और यह जानने के लिए नीचे उतरा कि यहाँ लोगों का जमावड़ा क्यों लगा है। उसने सेवाराम जी को इतना भर कहा- 'अभी गया-अभी आया' और देखते ही देखते भूत की तरह वह तमाशबीनों की भीड़ में खो गया।

आत्माराम शीघ्र ही वापस लौट आया और अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए बोला- 'सर जी! अभी रास्ता खुलने और भीड़ को छँटने में एकाध घंटा लग सकता है। वहाँ पर मौजूद लोगों के बीच हो रही खुसुर-पुसुर को सुनकर इतना भर समझ पाया हूँ कि गोताखोरों द्वारा बड़े तालाब के पानी से बड़ी मशक़्क़त के बाद दो युवाओं की लाशों को बाहर निकालकर सड़क पर लिटाया गया है। कुछ देर में एम्बुलेंस और पुलिस आने वाली है। लाशों की वेशभूषा को देखकर लोगों द्वारा क़यास लगाए जा रहे हैं कि दोनों अलग-अलग समुदाय से ताल्लुक़ रखते हैं।'

सेवाराम जी घंटे भर बाद बैंक में ''अभी मरा नहीं हूँ'' का प्रमाण-पत्र जमा कर सही-सलामत घर लौट आए। पर दिन भर यही सोचकर हैरान-परेशान होते रहे कि आख़िर वह कौन युवा हैं। उन्होंने क्यों और किसलिए ख़ुदक़ुशी की है। इन्हीं विचारों की उधेड़बुन में बेचारे रात भर चैन की नींद सो नहीं पाए। अपनी आदत के वशीभूत सुबह जल्दी उठकर आँगन में चहलक़दमी कर रहे थे। तभी अख़बार वाले ने उनके हाथ में अख़बार थमाया। अभी उन्होंने फ्रंट पेज खोला था कि मोटे अक्षरों में छपी हुई खबर को पढ़कर उनका सिर चकरा गया। कल 'राम और रहीम' नामक युवाओं ने अपने समुदायों के बीच आपस की सौहार्दता, सद्भावना और भाईचारे को लेकर दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही दूरियों, घृणा-द्वेष और अविश्वास की भावना से आहत होकर बड़े तालाब में कूदकर ख़ुदक़ुशी कर ली। सेवाराम जी ने आँगन खड़े-खड़े ही एक बार आकाश को ताका और श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अपनी आँखें बंद कीं, भीतर गहरी साँस खींची, प्रार्थना में हाथों को ऊपर उठाया और मन ही मन बुदबुदाए- 'राम जी भला करें, खुदा ख़ैर करे।'

लघुकथा

पाप की कमाई

रमेश रंजन त्रिपाठी

मुखबिर ने पुलिस कप्तान को पक्की सूचना दी थी कि उनके इलाके का नामी डाकू एकादशी के दिन देवी जी के मंदिर में चाँदी का घंटा अर्पित कर गरीबों को खाना खिलाएगा। दस दिन पहले ही पास के गांव में सेठ के घर शादी समारोह के दौरान डकैती पड़ी थी जिसमें दूल्हा समेत तीन लोगों को गोली मार दी गई थी, कई घायल हुए थे और लाखों का माल लूटा गया था। यह जघन्य अपराध उसी डाकू का था। डाकू का नाम वही है जिसे आपने सुन रखा है। वह कई डकैतियाँ डाल चुका था।

पुलिस कप्तान ने भारी संख्या में फोर्स का इंतजाम किया और किसी को कानों कान खबर न होने दी। वे छद्मवेश में पूरी तैयारी के साथ देवी जी के मंदिर के आसपास दलबल के साथ आ डटे। कुछ जवान पंगत के लिए गरीबों की कतार में शामिल हो गए। कप्तान ने भोजन तैयार करनेवालों के प्रमुख से जानने की कोशिश की कि इस तामझाम का आयोजक कौन है? लेकिन वह भी असली मुखिया को नहीं जानता था, उसे तो संदेश के साथ दुगनी कीमत मिल चुकी थी इसलिए वह अपने काम में पूरी मुस्तैदी से जुटा हुआ था। मंदिर के पुजारी ने बताया कि कोई भक्त एक दिन पहले आकर भारी दक्षिणा के साथ अनुष्ठानपूर्वक चाँदी का घंटा सौंप चुका है जिसे आज मंदिर में लटका दिया जाएगा। कप्तान साहब को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि वहाँ केवल खाना बनानेवाले ही आगंतुकों को खिलाने-पिलाने की व्यवस्था कर रहे थे, डाकू दल का कोई व्यक्ति नजर नहीं आ रहा था।

पुलिस कप्तान यह मानने को तैयार नहीं थे कि अपने इस बहुप्रचारित आयोजन में डाकुओं का सरदार स्वयं न आएगा। उन्हें यकीन था कि डाकू भेष बदलकर भीड़ में शामिल होंगे इसलिए पहचान में नहीं आ रहे। जब मंदिर में घंटा चढ़ाया जाने लगा तो कप्तान साहब कुछ मर्द, औरतों और बच्चों के साथ सामने आ गए। लोग हाथ जोड़े भजन गाते हुए घंटा चढ़ाने की विधि संपन्न होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके बाद पंगत शुरू होनी थी। पुलिस के मुखिया ने मंदिर के बाहर खड़े होकर उपस्थित जनसमुदाय से कहा- 'यदि आप नहीं जानते तो मैं बता देता हूँ कि आज का यह आयोजन डाकुओं द्वारा किया गया है। पुलिस के भय से वे अपना नाम छिपा रहे हैं और सामने नहीं आ रहे। आपसे अनुरोध है कि मेरे साथ आए इन पीड़ितों की बात सुन लें। फिर जो मन में आए वो करें।'

लोग चुप हो गए। मामला पुलिस का था इसलिए कोई कुछ नहीं बोला। कप्तान साहब ने सबसे पहले एक युवती को आगे किया। वह रोने लगी और बोली- 'दस दिन पहले मैं दुल्हन बनी लग्नमंडप में बैठी थी, जहाँ सुहागन होने से पहले एक डाकू ने मुझे विधवा बना दिया। मेरे होनेवाले पति को मेरी आँखों के सामने गोली से उड़ा दिया गया। मैं उम्र भर के लिए अभागिन का कलंक माथे पर लिए तिल तिलकर मरती रहूंगी। क्या ऐसे राक्षस का अन्न खाकर आप उसे दुआ देंगे?'

भीड़ का सन्नाटा टूटे, इससे पहले पुलिस कप्तान ने एक दस साल के बच्चे को आगे कर दिया। वह बालक भीड़ देखकर रोने लगा। पुलिस कप्तान के समझाने पर अटक-अटक कर बोलने लगा- 'मेरी अम्मा और बापू को डाकुओं ने मार डाला। मेरा क्या होगा, पता नहीं।' वह और कुछ नहीं कह सका। पुलिस के मुखिया ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर चुप कराया। फिर वे स्वयं आगे आकर बोले- 'क्या ऐसे दुर्दांत हत्यारे की पाप की कमाई से किया गया दान-पुण्य किसी का भला कर सकता है? क्या ऐसे राक्षसों की घिनौनी कमाई से बना भोजन आपका कल्याण करेगा? बच्चों, लडकियों, आदमी, औरतों के खून से रंगा खाना आप अपने पेट में जाने देंगे क्या?' उन्हें ज्यादा नहीं बोलना पड़ा। भीड़ में शुरू हुई खुसुर-पुसुर को तेज आवाज में बदलने में समय नहीं लगा। लोग चिल्लाए- 'हम पाप की कमाई नहीं खाएँगे। सब लोग वापस चलें।' भीड़ बिना खाना खाए वापस जाने लगी। मंदिर के पुजारी के चेहरे के भाव बदल गए थे। स्पष्ट था, वे मंदिर में घंटा न लगाने का निर्णय ले चुके थे।

पुलिस कप्तान को इन परिस्थितियों की कल्पना पहले से थी। उन्होंने अपने विश्वस्त सहयोगियों को चाक चौबंद कर रखा था। वे भीड़ में पैनी नजर रखे हुए थे। अपने धार्मिक आयोजन को पूरी तरह से विफल होते देख डाकुओं के सरदार का विचलित होना स्वाभाविक था। भीड़ में ऐसे ही तिलमिलाए लोगों को पहचानना था। थोड़ी मशक्कत हुई लेकिन पुलिस को अपनी चाल में सफलता मिली। तीन लोगों को उनके चेहरे पर उभरे क्रोध, असफलता, निराशा और तमतमाहट के भावों के कारण हिरासत में ले लिया गया। उनमें से एक डाकुओं का सरदार था। पुलिस के हत्थे चढ़ने के बाद तीन महीने में पूरा डाकूदल या तो गिरफ्तार हो गया या मारा गया।

पुलिस कप्तान को मेडल मिला। कभी अवसर मिले तो कप्तान साहब से पूछें कि इस सफलता का श्रेय वे किसे देते हैं?

व्यंग्य

अनीता श्रीवास्तव
लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक जीते हुए नेता का इंटरव्यू

पत्रकार- आप को कब लगा कि राजनीति ही आपका प्रिय क्षेत्र है? आपको इसीमें करियर बनाना चाहिए।

नेता- बात तब की है जब मुझे सभी संस्थाओं ने निराश कर दिया था। देश की सभी परीक्षाओं में मैं फेल हो गया था। मेरे संघर्ष के दिन चल रहे थे। मैं अपने ही परिवार में नाकारा और नालायक घोषित कर दिया गया था। तिस पर जुल्म ये कि मुझे देश की तरक्की के सपने आने लगे थे। मुझे लगने लगा था यह गरीबी, बेकारी, अपराध, आतंक और सेंधमारी देश में दिनों दिन बढ़ रही है। इससे देश को क्या फायदा? इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं मिल रहा था। मैं चिंता में सूख रहा था। मैं उदास रहने लगा था। फिर एक दिन मेरी बुद्धि के द्वार तनिक खुले और उससे जो ज्ञान का प्रकाश भीतर आया। वह कह रहा था तू गरीबी पर ध्यान दे। गरीबों के बारे में सोच। ये सब आखिर सत्तर सालों से गरीब क्यों बने हैं? बाबरे, तेरे लिए! ये बेरोजगार अच्छे से अच्छे दिनों में भी कुछ काम धाम नहीं करते। क्यों? तेरे लिए! महंगाई डायन बनी और कमाई खाने में लगातार लगी हुई है। सैंया के साथ - साथ सजनी भी खूबई कमा रही है मगर हाय - हाय जस की तस मची है। किसके लिए? तेरे लिए! आगे भी लोक तंत्र के जितने अलंकरण हैं वे सब तेरी ही राह तक रहे हैं। ... और मैंने डिसाइड किया, इतना सब कुछ देश की जनता ने मेरे लिए बचा कर रखा है और मैं मूढ़ समझ नहीं रहा। मुझे इनका उपयोग करना है। और मैं राजनीति में आ गया। आप ही बताइये क्या मैंने ग़लत किया? नहीं ना!

पत्रकार- जी बिल्कुल; आपने बिल्कुल सही किया। देश का गरीब काम न आ सके तो लानत है!

नेता जी - किस पर? देश पर?

- नहीं।

- तो क्या मुझ पर?

- नहीं, गरीब पर।

नेता जी ने सुन कर राहत की सांस ली वे तत्काल गरीबों के उत्थान से जुड़ी अपनी योजनाओं (पढ़ें कल्पनाओं) पर आ गए। धाराप्रवाह बोले। फिर बेकारी और मंहगाई पर बोलते हुए अपराध एवम जलवायु तक पहुँचे। इस बीच वहाँ कोई चाय ले कर आ गया। वह एक लड़का था। उसके हाथ में चाय की केतली थी। जिससे भाप निकल रही थी। उन्हें याद आया, नेता बनने के लिए मुख से अश्वसानों की भाप निकालना ज़रूरी है। वे अविलम्ब इसी काम में लग गए।

पत्रकार- इस हेतु आपके प्रेरणा स्रोत कौन हैं?

नेता जी- मेरे प्रेरणा के सभी स्रोत दुर्गम स्थलों पर निवास करते हैं। यथा, कुछ जेल के भीतर हैं, कुछ आश्रमों और पर्वतों की गुफाओं में तप कर रहे हैं। कुछ के मुख पर बेरहम जनता ने स्याही फेंकी है तो कुछ डंडे खा कर शहादत से बाल-बाल बचे हैं।

इतना सुन कर पत्रकार ने 'वाह' कहा। फिर अगला प्रश्न फेंकने से पहले उसे याद आया वह गोदी में बैठा है। उसे वही पूछना है जिससे मम्मी नाराज़ न हों। अब उसने आपकी दिनचर्या क्या है टाइप के प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। नेता जी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिए। मुस्कुराहट के इसी लेन - देन में इंटरव्यू पूरा हो गया।

कविता

नया साल

लाल बहादुर श्रीवास्तव

शून्य से शुरू जिंदगी शून्य पर विराम
न जाने कितने आये नये साल
कितना ही कुछ कर लें
सर पर उठा लें सफलताओं के द्वार
साल दर साल आसमान
असफलताएं भी दोस्त बनकर
पल -पल चलती है साथ -साथ
समय सांझ सा घटता रहता श्रीमान
नया साल आते ही कल्पनाओं के

घोड़े दौड़ाने लगते हम और आप
हर नया साल पुराने साल की
पीठ पर आता है होकर सवार
छोड़ जाता है अनगिनत सवाल
सवाल ऐसे जिनके उत्तर निरूत्तर
नया साल आते ही कामनाएं
शुभकामनाएं पाकर ढ़ोल बजाती है
कभी सीढ़ीयां चढ़कर कभी औंधे मुंह
हम और आप को बहुत नीचे गिराती है
साल दर साल आता लेकर पैगाम
सही अर्थों में समझें नये साल को
शून्य से शुरू जिंदगी शून्य पर लेती विराम।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

अविनाश अग्निहोत्री

अपनत्व

रिचा क्या तुम अपने काम में इतनी खोई हो कि पास ही मुन्ने के रोने की आवाज भी तुम्हें सुनाई नही दे रही।

कल ही उनके घर आई सास ने रिचा को डांटते हुए पूछा।

इसे दूध दे दिया,गर्म कपड़े पहना दिए और चादर डालने के बाद भी ये सोने को तैयार ही नही मां।तो अब आप ही बताओ मैं और क्या करु।

मुझे ऑफिस का ये जरूरी प्रोजेक्ट आज कैसे भी खत्म करना है और आज ही मेड भी नही आई।

रिचा की बात सुन तब उसकी सास बोली, बेटा बस इतनाभर कर देने से मुन्ना नही सोएगा।बल्कि कुछ पल उसके पास बैठ उसे अपने होने का अहसास कराना होगा। ताकि वो निर्भय व निश्चिंत होकर सो सके।

अपनी सास की बात सुन तब रिचा को लगा,खुद को सफल बनाने के लिएआज हम भी उन अपनो से कितनी दूर इन अंजान बड़े शहर में आ गए।

जहां एक दिन हम भले ही अपना मनचाहा मुकाम हासिल कर लें पर सदैव इस मुन्ने की तरह एक बेचैनी हमें भी होती ही रहेगी।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

सामाजिक परिवेश और संस्कृति को दर्शाते कथा चित्रण

हम जिस जगह रहते हैं वहाँ हमेशा स्वच्छता चाहिए होता है, स्वच्छता सम्भव है जब हम स्वस्थ रहेंगे और जब हम स्वस्थ रहेंगे तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा। जब स्वस्थ समाज के निर्माण की कल्पना ज़ेहन मे आती है तो हमें युवाओं की सुध आने लगती है यहाँ युवाओं से मतलब मन व दिल से है न कि शारीरिक युवापन से, यानि मन व दिल से युवा व्यक्ति ही इस श्रेणी में आ सकते हैं, उसी प्रकार एक स्वस्थ समाज, एक स्वस्थ वैचारिक समाज के लिए कथा चित्रण की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। वैसे भी कहा गया है कि साहित्य, संगीत व कला के बिना जीवन की कल्पना करना निराशा जनक ही होगा। ऐसा जिक्र ग्रन्थों मे भी मिलता है जहाँ स्पष्टतः कहा गया है कि मनुष्य, बिना कला के पशु के समान है। बिना इसके जीवन गर्त में जाता हुआ प्रतीत होता है, नर्क बन जाती है जिन्दगी। हमारे यहाँ का साहित्य, संगीत व कला कोश इतना विशाल है कि हर घड़ी में हमारे साथ खड़ी दिखाई देती है। मन दुखी होने पर ऐसे चित्र आपके साथ हों जो आपको आभास दिलाते हों कि डर के आगे जीत है या इसके आगे जहाँ और भी है तो कितना सुकून मिलता है, दिल को हौंसला, ज़ज्बा प्राप्त हो जाता है। लड़खड़ाते पैर फिर से खड़े हो जाते हैं जिन्दगी से विशाल जंग के लिए और लाख मुश्किलों के बावजूद भी हम अपनी मंजिल तक पहुँच ही जाते हैं। अगर कहा जाय कि कथा चित्रण, साहित्य हमारा गुरू है तो इस बात को हम झुठला नही सकते, गुरू यानि हमारा मार्गदर्शक। क्या कथा चित्रण हमारे मार्ग को प्रशस्त नही करता? क्या हम कथा चित्रण से कुछ सीख नही सकते? क्या कथा चित्रण हमारे व्यथित मन को सहलाता नही, बहलाता नही या सम्हालता नही? क्या कथा चित्रण में हमें ऐतिहासिक घटनाओं का जिक्र नही मिलता?... हम यह क्यों भूल जाते हैं कि कला, साहित्य, कथा चित्रण केवल मनोरंजन का विषय नही अपितु यह सीधे जीवन के तह तक घुस कर परत-दर-परत के वास्तविकता से रूबरु करवाने में भी महारथ हाशिल किये हुए है। कला, साहित्य के अलावा कोई ऐसा माध्यम नही है जो जीवन के रहस्यों को भेद कर उसके सार को प्रस्तुत कर पाने में सक्षम हो। इसी आदर्श को साक्ष्य मानकर प्राचीन से आधुनिक तक भारतीय कला अपना सफर रोड़ो, अड़चनों के बावजूद भी तय करते चली आ रही है। जिस भांति हमें गुरू से कुछ पाने के लिए पहले अपने आप को गुरू में आत्मसात कर लेना होता है तब जाकर हम कुछ पाने के हकदार होते हैं ठीक वही बात भारतीय कला के साथ भी लागू होती है। भारतीय कला पाश्चात्य की तरह नही है जहाँ कि, कला कला के लिए होती है अर्थात कला को समझने के लिए पहले कलाकार होना पड़ता है। भारतीय कला हर नजरों के लिए होती है, इसमें आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता रही है। इसकी एक विशेषता रही है कि ऐरा-गैरा जो भी आया कला उसे अपने आप में समाहित करती गयी और नित नवीन कलाओं का सृजन होता गया, जो यहाँ के कला में डूबा वो डूबता ही चला जाता है उस महासागर में जो ओर-छोर रहित है। उसे फिर भौतिक जीवन से कुछ लेना देना नही रह जाता और यहीं से कला का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। कला में डूबने के बाद जो आनन्द हमारे ऊपर वशीभूत होता है भौतिक जिन्दगी में उसकी कल्पना भी नही की जा सकती।

कला के भूमिका के बारे मे जानने से पूर्व मेरी यही लालसा है, यही आग्रह है कि एक बार कला के अथाह सागर में डूबकर देखने में कोई बुराई नही है, दिवानगी, पागलपन के हद को फाँद कर एक बार, बस एक बार उसके समीप यानि उसमें आत्मसात कर लो खुद को, फिर कथा चित्रण के अस्तित्व व भूमिका पर प्रश्न ही नही कौंधेंगे ? कौन कहता है कि कहानी चित्रण, कला, साहित्य की उपयोगिता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। क्या आपको भी ऐसा ही कुछ लगता है? यदि हाँ तो इस भ्रम को मन से निकाल दीजिए क्योंकि इसकी भूमिका, तथा उपयोगिता, (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि) हर क्षेत्र में दिन दूनी, दोपहर चैगुनी, रात छः गुनी बढ़ रही है जिसका स्पष्ट छाप आज के 3डी युक्त रंगीन एनिमेशन फिल्मों में देखा जा सकता है। आज कथा चित्रण को एनिमेशन के द्वारा एक अलग और नये ढगं से प्रस्तुत किया जा रहा है जो मनोरंजक, ज्ञानप्रद के साथ-साथ लुभावन भी होता है। कला में कथा चित्रण का अध्ययन एक रोचक विषय है। इसमें बहुत कुछ करना बाकी है, बहुत कुछ है इस पर लिखने के लिए।

कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें हमेशा अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है। संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहाँ के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है। कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहाँ पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहाँ किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियाँ प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था।

(प्रस्तुत चित्र साभार गूगल से)

व्यंग्य विमर्श

आशीष दशोत्तर

लेखक का असंतुष्ट रहना ज़रूरी

देश के अग्रणी व्यंग्यकारों के रचनात्मक समूह व्यंग्य लेखक समिति (वलेस) का ज्ञान चतुर्वेदी राष्ट्रीय व्यंग्य सम्मान समारोह व्यंग्य लेखन की दिशा दशा और बारीकियां से अवगत करा गया। रतलाम में आयोजित इस समारोह में देश के आठ व्यंग्यकार सम्मानित हुए। समारोह में वरिष्ठ व्यंग्यकार पद्मश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कहा कि एक रचनाकार को आम आदमी के दर्द को समझने वाला और संवेदनशील होना चाहिए। घाव की टीस को पालना, उसकी संवेदना को पोषित करना रचनाकार के लिए ज़रूरी है। मानव के लिए ,घटनाओं के लिए बल्कि परमसुखी के लिए भी संवेदनशील होना चाहिए। कोई सम्मान, लेखक को संतोष दे रहा हो तो वो सही नहीं। लेखक को असंतुष्ट रहना ज़रूरी है।

उन्होंने कहा कि जो विषय आपके पीछे लग जाए, उसे जीने की कोशिश करें। विचार आने के बाद बार बार पढ़ना, संशोधित करना ही लेखकीय साधना है। जब तक मन माफिक परिणाम तक न पहुंचे। संतुष्ट होने तक बार बार लिखें।कला के तीसरे क्षण में आप अपनी क्षणिक सोच को प्रतिबिंबित कर पाएंगे। डॉ . ज्ञान चतुर्वेदी ने नए रचनाकारों को निरंतर पढ़ने की सलाह दी और अपने लिखे हुए पर बार बार विचार करना चाहिए।

वरिष्ठ व्यंग्यकार कैलाश मंडलेकर ने कहा कि व्यंग्य एक दृष्टिकोण है। परसाई जी ने इसे स्प्रिट कहा। शरद जी ने भी अपनी रचनाओं को व्यंग्य कहने का दावा नहीं कहा। किंतु उन्होंने व्यंग्य को स्थापित किया।इंग्लिश और उर्दू में व्यंग्य का बड़ा खजाना है।पौराणिक साहित्य भी हमें पढ़ना चाहिए। भवभूति ने लिखा- राम, सीता का हाथ छोड़ते हुए कांप रहे थे। ऐसे प्रसंग कई प्रश्न उठाते हैं। उन्होंने कहा कि आक्रोश व्यंग्य पैदा करता है। मुक्तिबोध और परसाई के आक्रोश में फर्क है।परसाई का आक्रोश सुखांत के साथ पूरा होता है। मुक्तिबोध एरोगेंट रहे। ग़ालिब ने अपने शेरों में आक्रोश प्रकट किया।

विशेष अतिथि व्यंग्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट ने कहा कि विश्व के कई देशों में व्यंग्य के उदाहरण मिलते हैं। अन्य भारतीय भाषा के व्यंग्यों का संकलन भी किया जाना चाहिए। गुजरात में व्यंग्य का निर्झर बहता है। ओसाका में ब्रज भाषा पढ़ाई जा रही थी। उज़्बेकिस्तान में भी हिंदी पढ़ाई जाती देखी। यह कार्य एक जापानी महिला कर रही थीं।

ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान संयुक्त रूप से श्री शशांक दुबे, उज्जैन एवं श्री प्रमोद ताम्बट, भोपाल को प्रदान किया गया। इसी प्रकार वलेस दीर्घकालिक व्यंग्य सेवा सम्मान ब्रजेश कानूनगो, इंदौर को, वलेस श्रेष्ठ नव पल्लव व्यंग्य सम्मान - संयुक्त रूप से ऋषभ जैन, रायपुर एवं मुकेश राठौर, भीकनगांव को, वलेस व्यंग्य साधक सम्मान - डॉ. हरीश कुमार सिंह, उज्जैन को एवं वलेस श्रेष्ठ व्यंग्य विदुषी सम्मान सारिका गुप्ता, इंदौर एवं अनीता श्रीवास्तव, टीकमगढ को दिया गया। सम्मानित व्यंग्यकारों ने अपनी रचना प्रक्रिया पर वक्तव्य दिया। व्यंग्यकार अनीता श्रीवास्तव, ऋषभ जैन, आशीष दशोत्तर की पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। इस सत्र का संचालन शांतिलाल जैन ने किया। इस दौरान देशभर से आए व्यंग्यकार एवं शहर के साहित्यकार मौजूद थे ।

इक्कीसवीं सदी में चालाकी बढ़ गई- पद्मश्री डॉ ज्ञान चतुर्वेदी ने व्यंग्य लेखक समिति वलेस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व्यंग्य सम्मान समारोह के तहत आयोजित व्यंग्य पाठ सत्र में कहा कि इक्कीसवीं सदी में चालाकी बढ़ गई है। बुद्ध ने कहा था कि एक ही नदी में दूसरी बार कदम नहीं रख सकते। समय की नदी में उतरना आसान नहीं। रोज़ बदल जाती है । मूर्तियों की राजनीति बदल रही है।मार्केट का सीधा असर राजनीति और विचारधाराओं पर पड़ता है। हमें अराजकता के स्त्रोत पर प्रहार करना चाहिए। परोक्ष ताकतों की पहचान के लिए अध्ययन ज़रूरी है। हम धर्म के फेरे में सही गलत का अंतर नहीं कर पाते। छद्म राष्ट्रीयता वाले मल्टी नेशनल कंपनीज़ से प्रभावित हैं।

व्यंग्य रचना पाठ सत्र में देश के महत्वपूर्ण व्यंग्यकारों ने रचना पाठ किया । वरिष्ठ व्यंग्यकार पद्मश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने हवाओं के दम पर उड़ता कचरा और अन्य व्यंग्य रचनाएं सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया। कैलाश मंडलेकर ने ' आई ग्रीष्म चोर घर आए ' , प्रमोद ताम्बट ने 'फ़र्ज़ी डिग्री के दम पर' व्यंग्य का पाठ किया। शशांक दुबे ने अपनी रचना 'घूमने वाले बाबूजियों की किस्में' , बृजेश कानूनगो ने 'साहित्य समारोह के कुछ नए कायदे' , ऋषभ जैन ने 'कवि और शेयर' , मुकेश राठौर ने 'जब अब लड़की देखने जाए श्रीमान से' , अनीता श्रीवास्तव ने 'छुट्टी की एप्लिकेशन' का पाठ किया। सुनील जैन 'राही' , अलका अग्रवाल सिगातिया , सारिका गुप्ता , सुनील सक्सेना , मलय जैन , विजी श्रीवास्तव , शांतिलाल जैन , आशीष दशोत्तर , राजेंद्र बज ने अपनी व्यंग्य रचनाओं से आनंदित कर दिया। संचालन सुनील जैन 'राही' ने किया तथा आभार विष्णु बैरागी ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी का शहर के साहित्यकारों प्रो. रतन चौहान, डॉ. मुरलीधर चांदनीवाला, विष्णु बैरागी, यूसुफ़ जावेदी, नरेन्द्र सिंह पंवार, नरेंद्र सिंह डोडिया, संजय परसाई 'सरल', महावीर वर्मा, विनोद झालानी, रणजीत सिंह राठौर ने सम्मान किया। शहर की सक्रिय संस्था 'हम लोग' की ओर से संस्था अध्यक्ष सुभाष जैन और साथियों ने सम्मान किया। नरेन्द्र सिंह पंवार ने अपनी पुस्तक भेंट की।

व्यंग्य की इन पंच लाइनों ने दिया आनंद

घूमना मेमसाब का 'पैशन' नहीं होता, वे फैशन के कारण घूमती हैं। कुछ बहनजियाँ तो 'कैट वॉक' करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखती हैं कि उनकी टी शर्ट या कुर्ती का रंग, जूतों और छाते के रंग से मैच हो। इन्हें 'रंग मिलावनी वॉकराइन' कहने में क्या हर्ज है !÷

- शशांक दुबे (उज्जैन)

वैवाहिक रिश्ता पक्का करने की प्रक्रिया वैज्ञानिक पद्धति की तरह चरणबद्ध चलती है।

-मुकेश राठौर (भीकनगांव)

कविता के शेयर लाना संभव नहीं है यार। वर्तमान में भी कुछ फेस वैल्यू हो चीज की तब तो शेयर बने उसका। कवि ने सोचा गुड़ के शेयर के दीवाने कबीर की कविता भी काहे सुनने लगे।

- ऋषभ जैन , दुर्ग

अगर आप कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि या अध्यक्षता का दायित्व संभालने हेतु आमंत्रित किए गए हों तो यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि आप पूरी तैयारी के साथ जाएं। याने वह कुर्ता कदापि न पहनें जिसे पिछली गोष्ठी में पहनकर गए थे।

- ब्रजेश कानूनगो, इंदौर

अर्दली और बाबू को टोकन मनी नहीं मिली तो भैंस को नई तारीख दे दी। भैंस ने अहिंसा धर्म अपनाया और धरने पर बैठ गई। भैंस मुंह ऊपर करके डकरा रही थी और अदालत की कार्रवाई उसके सामने बीन बजा रही थी।

- सुनील जैन 'राही' (नई दिल्ली)

इन दिनों डाटा चोरी का मामला जोर पकड़ रहा है । चोरी की दुनिया मे यह नया और विश्वव्यापी कीर्तिमान है । ऐसी घटनाएं देशी और पारंपरिक चोरों को विचलित कर देती हैं । वे हीनता बोध से ग्रसित होने लगते हैं । हीनता इस बात की , कि चोरी का धंधा कहाँ से कहाँ पहुंच गया और एक हम हैं कि अभी भी नुक्कड़ की दुकान से मुमफली के दाने और गरममसाला ही चुरा रहे हैं । लानत है हम पर और ऐसी चोरी पर ।

- कैलाश मंडलेकर (खंडवा)

कुछ पूजनीय किस्म के बहाने हैं जिन्हें बनाने वाले के पैर छूने का मन करता है। जैसे रास्ते में एक बुढ़िया मिल गई थी, बोली बेटा घर छोड़ दो। बुढ़िया के पहले गरीब, लाचार और बोल दिया जाय तो बढ़िया असर करता है।न जाने कब मेरे भीतर कामचोरी का वायरस प्रवेश कर गया। छुट्टी लेने के सौ तरीके जैसी किताब लिखें ताकि भावी पीढियाँ अवकाश पर जाना सीख सकें।

- अनीता श्रीवास्तव (टीकमगढ)

दुनिया की किसी भी यूनिवर्सिटी के किसी भी कोर्स की फर्ज़ी डिग्रियों के दम पर हम अपने इस देश को दुनिया का सिरमोर बना कर ही दम लेंगे।

- प्रमोद ताम्बट (भोपाल)

घरेलू हिंसा और दहेज प्रताड़ना के आरोप परिवार के अखाड़े में धोबी पछाड़ दाव की तरह है, एक बार लग गया तो आदमी उठने का नहीं। पुरुष हर समय शक्तिमान ही होते हैं, स्त्रियों की शक्ति समय और आवश्यकता अनुसार कम ज़्यादा होती रहती है।

- सारिका गुप्ता , इंदौर

आजकल घर के चिरागों से ही घर में आग लगाई जा रही है । बाहरवाले तो देश छोड़ कब के जा चुके हैं । उन्हें कैसे समझाऊं कि कुछ अपराधों की कोई 'धारा' नहीं होती और कुछ चोरियों की 'एफ आई आर' नहीं होती । ऐसे तिलिस्मी केस आपसी रजामंदी से सुलझा लिए जाते हैं।

- सुनील सक्सेना , भोपाल

मुड़ - मुड़ के देखने का हमारे यहां इतना अच्छा रिवाज़ है , जो पूरे हिंदुस्तान में नहीं मिलेगा । जिसको भी चलते-चलते कहीं वाहन को मोड़ना होता है, वह साइड नहीं लेता , हाथ भी नहीं दिखाता। बस ! मुड़- मुड़ के पीछे की तरफ देखता है । उसके मुड़ - मुड़ के देखने से आप समझ जाइए कि यह मुड़ने वाला है । किधर मुड़ने वाला है यह उसकी इच्छा । आप तो पीछे चलते अपने वाहन को धीमा कर लीजिए और भलाई चाहते हों तो रोक ही लीजिए , क्योंकि वह एकदम यू टर्न भी ले सकता है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

डिस्पैच: पत्रकार ज्योर्तिमय डे की शहादत की दास्तां

कनु बहल का गढ़ा यह पत्रकार एक क्राइम जर्नलिस्ट है। कैमरा लेकर रात में 'शहंशाह' की तरह रिपोर्टिंग करने निकलता है। नाक तुड़वाता है। गोली खाते -खाते बचता है। फिर भी उसका जलवा शहर में ऐसा है कि पुलिस की हवालात के भीतर जाकर आरोपित पर खुद ही लाठी भी बरसा लेता है..! पता नहीं जे डे ने पत्रकारिता के दौरान ऐसा सब कुछ किया या नहीं ? लेकिन वर्ष 2012 की (जेडे की हत्या 2011 में हुई थी) की कहानी कहती इस फिल्म 'डिस्पैच' की पटकथा से रूबरू होते समय भी दर्शक करीब ढाई घण्टे की पूरी फिल्म में भी कहीं भी मूल ज्योतिर्मय डे को महसूस नहीं कर? पाता है । कहानी में काम के साथ साथ परिवार की परेशानियां मिलाने को जो परिपाटी बन गई है उसे डिस्पैच में भी कनु बहल और उनकी सहायक लेखिका इशानी ने अनुकरण किया है । बीवी से तलाक लेने की कोशिश कर रहे, एक महिला मित्र के साथ मुफ्त के फ्लैट में रह रहे और पुरानी महिला मित्र के साथ भी मौका मिलते ही हमबिस्तर हो रहे इस धीरोदात्त ' नायक ' के बारे में दर्शक के मन में बताईये क्या छवि बनेगी ? यही न कि वह एक बड़े मामले का भण्डाफोड़ करने को निकला है और अपने ही बनाए दलदल में फँसता चला जाता है? असल में वो जो भी है सिनेमा में तो नायक की एक नैतिकता तो जाँची जानी चाहिए ।

ज़ी फाइव पर गत तेरह दिसम्बर को रिलीज फ़िल्म ' डिस्पैच ' के बारे में निर्देशक कनु घोष ने ऐसी कोई घोषणा तो नहीं की है कि यह ओटीटी फिल्म प्रखर पत्रकार ज्योतिर्गमय डे की शहादत से अनुप्रेरित है मगर संयोगवश ही सही इस फिल्म के मुख्य चरित्र जॉय बाग़ पत्रकार ज्योतिर्मय डे यानी जे डे से मिलता जुलता है । संयोग यह भी है कि इस चरित्र को फिल्म में निभाने वाले मनोज बाजपेयी की इस समय उम्र ठीक उतनी ही है , जिस उम्र में जे डे को नवी मुम्बई में सरे राह गोलियों से भून दिया गया था । ऑफ्टरनून डिस्पैच एण्ड कूरियर अखबार में काम कर चुके जे डे की हत्या से पहले की घटनाओं से प्रेरित दिखती यह फिल्म ' डिस्पैच ' उन लोगों को दिलचस्प लग सकती है जिन्होंने नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ निर्देशक हंसल मेहता की वेब सीरीज 'स्कूप' देखी है। जे डे की जिस करीबी दोस्त जिग्ना वोरा को उनकी हत्या की साजिश रचने के आरोप में जेल काटनी पडी, वैसी ही एक रिपोर्टर यहाँ भी है। लेकिन, दोनों में कोई प्रतिस्पर्धा जैसी बात यहाँ नहीं है। प्रतिस्पर्धा यहाँ किसी महिला की जॉय बाबू से नहीं है, जॉय बाबू यहाँ बस 'जॉय' के लिए हैं।

कनु बहल का गढ़ा यह पत्रकार एक क्राइम जर्नलिस्ट है। कैमरा लेकर रात में 'शहंशाह' की तरह रिपोर्टिंग करने निकलता है। नाक तुड़वाता है। गोली खाते -खाते बचता है। फिर भी उसका जलवा शहर में ऐसा है कि पुलिस की हवालात के भीतर जाकर आरोपित पर खुद ही लाठी भी बरसा लेता है..! पता नहीं जे डे ने पत्रकारिता के दौरान ऐसा सब कुछ किया या नहीं ? लेकिन वर्ष 2012 की (जेझ डे की हत्या 2011 में हुई थी) की कहानी कहती इस फिल्म 'डिस्पैच' की पटकथा से रूबरू होते समय भी दर्शक करीब ढाई घण्टे की पूरी फिल्म में भी कहीं भी मूल ज्योतिर्मय डे को महसूस नहीं कर? पाता है । कहानी में काम के साथ साथ परिवार की परेशानियां मिलाने को जो परिपाटी बन गई है उसे डिस्पैच में भी कनु बहल और उनकी सहायक लेखिका इशानी ने अनुकरण किया है । बीवी से तलाक लेने की कोशिश कर रहे, एक महिला मित्र के साथ मुफ्त के फ्लैट में रह रहे और पुरानी महिला मित्र के साथ भी मौका मिलते ही हमबिस्तर हो रहे इस धीरोदात्त ' नायक ' के बारे में दर्शक के मन में बताईये क्या छवि बनेगी ? यही न कि वह एक बड़े मामले का भण्डाफोड़ करने को निकला है और अपने ही बनाए दलदल में फँसता चला जाता है? असल में वो जो भी है सिनेमा में तो नायक की एक नैतिकता तो जाँची जानी चाहिए।

तकनीकी रूप से फिल्म बहुत प्रभावित नहीं करती है ।कनु बहल की पत्नी और संगीतकार स्नेहा खानविलकर के पास इस फिल्म में महाराष्ट्र, बंगाल, लंदन और हरियाणा की संगीत तंरगों का इंद्रधनुष बनाने का सुनहरा मौका था, लेकिन अब उनका काम बस औसत होता जा रहा है। सिद्धार्थ दीवान ने कैमरे के माध्यम से दर्शकों को कहानी के साथ जोड़ने की कोशिश तो की है लेकिन फिल्म के चरित्र ही जब भाव अभिव्यक्ति में बार- बार

दर्शकों को कहानी से दूर धकेलते हों तो वे भी क्या करें ? एक भी चरित्र फिल्म में ऐसा नहीं है जिसके साथ होकर दर्शक कहानी में साथ साथ घूम पाते। समर्थ दीक्षित ने सीन जमाने के चक्कर में फिल्म बहुत सुस्त कर दी है। ये पूरी फिल्म नब्बे मिनट की एक कमाल ओटीटी ओरिजिनल फिल्म अब भी बन सकती है। अगर फिल्म को अपने घर के बड़े वाले टीवी पर देखने की योजना बना रहे हैं तो ध्यान रखें कि बच्चे आसपास न हों। वयस्क हैं और मॉडर्न बनने के चक्कर में माता-पिता के साथ भी एडल्ट्स फिल्में देख लेते हैं तो यहाँ थोड़ा बचके रहना, नहीं तो सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

अर्चिता अग्रवाल इस फिल्म की असल हीरोइन हैं। वह खूबसूरत हैं। बेहतरीन अभिनेत्री हैं और बिन्दास भी हैं। सिनेमा के बदलते समय चक्र के लिए जरूरी सारी खूबियां उनमें हैं। फिल्म उनके लिए अच्छी बन पड़ी है । भविष्य उनका उज्ज्वल है। ऋतुपर्णा सेन का री सेन के रूप में नया रंग रूप दर्शकों को चौंकाने के लिए है, पर बेअसर है। वीना मेहता, पुर्णेदु भट्टाचार्य, पृथ्विक प्रताप, अजय पुरकर और पार्वती सहगल, सब उस एक सीन के इन्तजार में ही रहे जो उन्हें दर्शकों के लिए कुछ तो यादगार करने का मौका दे जाता।सच तो यह है कि फिल्म 'डिस्पैच' में तमाम जाने पहचाने चेहरे भी एक-एक दो-दो सीन के लिए हैं। मामिक को अरसे बाद परदे पर देखना सुखद रहा। किरदार भी करीने से निभाया उन्होंने। शहाना गोस्वामी का काम उस सीन में सबसे जबर्दस्त है जिसमें वह घर लौटे जॉय को रिझाने की पूरी कोशिश करती है, उसके साथ हमबिस्तर होने की कोशिश करती हैं। इसके बाद जॉय का पीछा करते होटल में पहुंचने पर पति से दुत्कारी गई स्त्री के चेहरे के जो भाव उनके चेहरे पर आए हैं, वह नोट करने लायक हैं। अभिनय के लिहाज से यह फिल्म ज्यादा ध्यान नहीं खींचेगी।

मावठे की बारिश, सड़कों पर मचा कीचड़, राहगीरों की फजीहत

नर्मदापुरम। मावठे की बरसात ने एक बार फिर नगरीय व्यवस्था की पोल खोल दी, पूरे नगर में सीवरेज ट्रीटमेंट योजना के तहत खोदी गई सडक और सड़क पर फैली मिट्टी सड़क पर चलने वालों के लिए असुविधा का कारण बनी सुबह दो बजे के लगभग से प्रारंभ मावठे की बरसात ने आज फिजा की रंगत बदल डाली एक दिन पहले लोग गर्मी का एहसास कर रहे थे और आज हुई मावठे की बरसात से ठंड का एहसास कर रहे, आज हुई बरसात ने पूरे नगर

का मेनू बदल दिया, सुबह बटने वाले अखबार पूरी तरह नहीं बट पाए, दुकानों के खुलने का समय दुकानदारों पर निर्भर रहा कहा जा सकता है कि मावठे की बरसात ने सब-कुछ उलट-पलट कर रख दिया, एलआईसी दफ्तर के सामने वाली सड़क पर लोग फिसलने से बच कर चल रहे थे तो निकलने वाली गाड़ी उन पर छींटे उड़ा रही थी। कल रात सात बजे के आसपास चौराहे पर डाला गया सीमेंट का मसाला बरसात में धुल गया यहां फिर गड्ढा दिखाई देने लगा। व्हीआईपी मार्ग की हालत भी उतनी अच्छी नहीं विवेकानंद घाट से कलेक्टर आफिस की ओर एक किनारे पर खोदी गई अधूरी सड़क पर चलने वाले असुविधा महसूस कर रहे, पर नगर के जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारी हो या जनप्रतिनिधि इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा वे अपनी नौकरी कर रहे और आम आदमी परेशान हो गया। इधर मावठे की बरसात से नालियों में भी उफान पर पहुंचा दिया वो किनारा छोड़ कर बहने लगी, सड़क पर फैलकर बह रहे पानी की व्यवस्था बनाने नर्मदा महाविद्यालय के सामने पहुंची नगरपालिका की छोटी पोकलेन नाली की व्यवस्था बनाने की जगह नर्मदा पाइप लाइन फोड़ कर भाग गई कुछ मिलाकर मावठे की बरसात से अगर किसान को कुछ लाभ हुआ तो उससे ज्यादा नगरवासियों को तकलीफ़ में देखा गया...

विद्यार्थियों के लिये रचनात्मक फीड बैक है जरुरी

जिलास्तरीय उन्मुखीकरण सम्पन्न

बैतूल। प्रशिक्षण संस्थान प्रभातपट्टन में जनशिक्षा केंद्र स्तरीय शैक्षिक संवाद के लिए जिले के 79 जनशिक्षा केंद्र से आये 158 सहजकर्ता व सह- सहजकर्ता का जिला स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शैक्षिक संवाद उन्मुखीकरण कार्यक्रम में शैक्षिक संवाद के उद्देश्य, डिजाइन सिद्धांत, साझा नियम आदि के बारे में सहजकर्ता एवं सहसहजकर्ताओं से चर्चा की गई। सहजकर्ता एवं सह सहजकर्ता शिक्षकों द्वारा आपस में एक दूसरे का

परिचय दिया गया एवं 2025 में कक्षा में नवाचार क्या करेंगे पर भी प्रकाश डाला गया। पूर्व संवाद के पोस्ट वर्क, अनुभवों एवं चुनौतियों पर चर्चा की गई। राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल से प्रतिनिधि राजेश सोलंकी पीपल संस्था जिला मास्टर ट्रेनर्स वासुदेव धोटे एपीसी एवं रितेश कुमार पठाडे द्वारा रचनात्मक फीडबैक का अर्थ, महत्व प्रक्रिया आदि पर विस्तृत चर्चा करते हुए संवाद की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। केस स्टडी एवं रोल प्ले के माध्यम से रचनात्मक फीडबैक की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया। ओपन फोरम, पोस्ट वर्क एवं फीड बैक फॉर्म भरवा कर उन्मुखीकरण कार्यक्रम का समापन किया गया। उन्मुखीकरण में जिला कोर कमेटी के सदस्य, डाइट अकादमिक सदस्य, पीपल संस्था एवं मिशन अंकुर के सदस्य उपस्थित रहे ।

पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह को एनएसयूआई ने दी श्रद्धांजलि

बैतूल। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर एनएसयूआई ने लल्ली चौक पर मोमबत्ती जलाकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। इस दौरान एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष जैद खान ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह का योगदान देश के विकास में अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि आर्थिक उदारीकरण और दूरदर्शी नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक मंदी से बच पाई, और आज भारत विश्व की शीर्ष 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। जैद खान ने बताया कि डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री काल में आधार कार्ड जैसी दूरदर्शी योजना शुरू हुई, जिससे देश के नागरिकों को अलग पहचान मिली। राजनीति में आने से पहले डॉ. मनमोहन सिंह ने एक अर्थशास्त्री और शिक्षक के रूप में

काम किया। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया और आर्थिक अनुसंधान और नीतियों पर गहन कार्य किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में प्रमुख रूप से निलेश धुर्वे, खेमराज मिश्रा, शाहिद खान, कुणाल पिपरदे, यश साहू, अफरीदी कुरेशी, अंकित ताम्रकार, संकल्प मिश्रा, राजा खान, शेख फैजान, संजय कोलकर, निसान खान, राहुल मालवीय, विकास मेहतो, जुबेर खान, जतिन पिपरदे और धर्मपाल बिसोने सहित एनएसयूआई के कई पदाधिकारी उपस्थित रहे। जिला अध्यक्ष ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह की नीतियों और कार्यों से प्रेरणा लेकर संगठन उनके दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ेगा। उनके निधन से पूरे देश में शोक की लहर है।

जिला मुख्यालय सहित कई ब्लाकों में बारिश, बढ़ेगी ठंड

मावठे की बारिश: फसलों के लिए फायदेमंद, जिला मुख्यालय पर 32.2 मिमी बारिश दर्ज

बैतूल। जिले में शनिवार कई जगह मावठे की बारिश हुई। यह बारिश रबी फसलों के लिए फायदेमंद है। मावठा बरसने से किसानों के चेहरे खिल उठे, वहीं बारिश से सर्दी का एहसास भी बढ़ गया। इससे पहले शुक्रवार को भी जिला मुख्यालय सहित कुछ ब्लाकों में बारिश हुई थी। वैसे शनिवार को सुबह से ही आसमान में बादल छाये हुए थे। दोपहर करीब 1.30 बजे अचानक मौसम बदल गया और जिला मुख्यालय पर बारिश शुरू हो गई। बारिश कभी तेज, तो कभी हल्की बूंदे पड़ रही थी। जो देर शाम तक जारी रही, अच्छी बारिश होने से किसानों को एक तो सिंचाई की बचत हो गई। किसान जितेन्द्र चौधरी, चंद्रशेखर यादव ने बताया कि बारिश का फसलों को लाभ मिलेगा। इससे असिंचित फसलों को मावठा मिल जाएगा, सिंचित फसलों को भी पानी की आपूर्ति हो जाएगी। वहीं तापमान ज्यादा होने से शुरू हुए कीटों के प्रकोप से भी राहत मिलेगी। बारिश से खेतों की अच्छी सिंचाई हो जाती है, जो फसल की वृद्धि में सहायता होती है। किसान कुलवंत उइके ने बताया कि क्षेत्र के किसानों को इस समय पानी की बहुत आवश्यकता भी थी। इंद्र देवता की मेहरबानी से फसलों को पानी मिल गया है। इससे फसलों को बहुत लाभ हुआ है। साथ ही अनाज की पैदावार में भी इजाफा होने की संभावना बढ़ गई है। यह बारिश फसलों के लिए अमृत के समान है।

किसान कर रहे थे मावठे का इंतजार

किसान प्रसून चौधरी, राजेंद्र चौधरी ने बताया कि क्षेत्र के किसान एक सप्ताह से मावठे की बारिश का इंतजार कर रहे थे। कुछ दिनों से बादल तो छा रहे थे, लेकिन बारिश नहीं हो रही थी। लेकिन शुक्रवार-शनिवार को इंद्र देव ने किसानों की मनोकामना पूरी कर दी। शाहपुर ब्लाक में भी बारिश से किसानों के चेहरे खिल गए हैं। वहीं मुलताई, भैंसदेही में शुक्रवार शाम को बारिश हुई। इसके अलावा अन्य ब्लाकों के कुछ गांवों से भी बारिश की खबरे मिली है। किसान सदाशिव ने बताया कि बारिश होने से खेतों में नमी बढ़ेगी और बूंदें हल्की गिरने से वह पौधों के पोषण प्रदान करेगी। इस बीच अगर तेज बरसात होती है तो असिंचित क्षेत्र की फसलों को जीवनदान मिल जाएगा।

अब तेज ठंड पड़ने के आसार

मौसम विभाग ने मावठे की बारिश के बाद तेज ठंड पडऩे की संभावना जताई है। वैसे शुक्रवार हुई बारिश के कारण दिन का तापमान 4 डिग्री तक कम हुआ है। शुक्रवार दिन का तापमान 24 डिग्री पर पहुंच था, जबकि एक दिन पहले गुरूवार दिन का तापमान 28 डिग्री के करीब था। शनिवार को जिले का अधिकतम तापमान 27.7 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान 17.3 डिग्री था। इधर रात का न्यूनतम तापमान बढ़ा है। गुरूवार रात का तापमान 16.8 डिग्री था, वहीं शुक्रवार रात का तापमान 17.5 डिग्री दर्ज किया गया है। अधिकतम तापमान और न्यूनतम तापमान बढने-कम होने से सर्दी का व्यापक असर रहा।

बारिश से शहर भीगा, 32.2 मिमी बारिश दर्ज

जिला मुख्यालय पर शनिवार दोपहर अचानक बदले मौसम के बाद बारिश शुरू हो गई। बारिश से पूरा शहर भीग गया। इस दौरान जिला मुख्यालय पर 32.2 एमएम बारिश दर्ज की गई। अचानक शुरू हुई बारिश से बचने के लिए यहां-वहां छुपते भी नजर आये। जिला मुख्यालय पर कभी तेज तो कभी रिमझिम बारिश का दौर जारी रहा। जिसके बाद धूप निकल आई। धूप निकलने के बाद लोगों की सडक़ पर उपस्थित नजर आई। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि आगामी दो-तीन दिन तक आसमान में बादल छाने और बारिश होने का अनुमान है। इसके बाद मौसम साफ होगा। जिससे ठंड बढेगी। फिलहाल मावठे की बारिश से सबसे ज्यादा खुशी किसान वर्ग में दिखाई दे रही है।

बारिश होने से अब यूरिया की बढ़ेगी मांग

बारिश से खेतों में नमी आ जायेगी। जिसके कारण किसान खेतों में यूरिया का छिडक़ाव करेंगे। इससे अब यूरिया की मांग बढ़ेगी। वैसे कृषि विभाग का दावा है कि जिले में पर्याप्त मात्रा में यूरिया का स्टॉक है। किसानों को मांग के अनुरूप यूरिया उपलब्ध कराया जा रहा है। कृषि विभाग बैतूल के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि वर्तमान में जिले में 43 हजार मेट्रिक टन यूरिया की मांग थी, जिसमें से 35,830 मीट्रिक टन यूरिया किसानों को वितरित किया जा चुका है। 12,248 मेट्रिक टन यूरिया अभी उपलब्ध है। जैसे-जैसे किसानों की मांग आ रही है, वैसे-वैसे यूरिया की आपूर्ति कर रहे है।

इनका कहना है

मावठे की बारिश फसलों के लिए अमृत समान है। इससे फसलों को फायदा मिलेगा। जहां तक यूरिया की मांग है तो अभी 12,240 मेट्रिक टन यूरिया उपलब्ध है। शासन से भी यूरिया मिल रहा है। किसानों की जैसे-जैसे डिमांग आ रही है, वैसे-वैसे निरंतर सप्लाई की जा रही है।

-आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

आधे घंटे की वर्षा से मुख्य मार्ग पर जमा हुआ नाली का पानी

बैतूल। सड़कों के मामले में फिसड्डी नगर पालिका से नालियां तक नहीं संभाली जा रही है। शनिवार दोपहर लगभग आधे घंटे की बारिश ने फिर एक बार नगर पालिका के ड्रेनेज सिस्टम की पोल खोल दी। शहर के व्यस्तम और मुख्य मार्ग मस्जिद चौक से बाबू चौक के बीच नाली बुरी तरह से चोक हो गई, जिससे नाली का बदबूदार पानी सड़क पर लबालब भरकर जमा हो गया। इस संबंध में पहले भी वार्डवासियों ने नगरपालिका के अधिकारी और कर्मचारियों आरआई ब्रजगोपाल परते, एआई धुर्वे, आरआई राजेश कुमार सोनी, सतीश कोल्हेकर सहित गणेश वार्ड पार्षद विजय जसुजा से गुहार लगा चुके हैं। राजु

पंवार ने बताया कि नालियों के ऊपर पक्के लैंटर बन गए हैं जिससे नाली की सफाई नहीं हो पाती है। बलदेव कुमार ने बताया कि लेंटर हटाने के लिए नपा के उक्त अधिकारियों से कई बार संपर्क किया है, परन्तु कोई कार्यवाही नहीं की है। विजय शर्मा ने बताया कि नाली जो कि बाबू चौक से निकलती है वहां छोटा सा पाईप है, जिसके कारण पानी नहीं निकल पा रहा है। पार्षद को कई बार अवगत कराया गया परन्तु वह भी उदासीन ही दिखे। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि मुख्य और व्यस्तम मार्ग के ऐसे हालात है तो अन्य जगहों के क्या हाल होंगे। स्थानीय रहवासी स्वयं ही बांस आदि से लेंटर में फंसी पत्रीयों को बांस से धकेल कर निकाल रहें हैं। जिससे पानी की निकासी हो सके। अब जबकि कई स्थानों पर डेंगू ने दस्तक दी है ऐसे में देखना होगा कि नपा के कर्मचारियों की नींद खुलती है या नहीं। वार्डवासियों ने नपा अध्यक्ष और नपा मुख्य अधिकारी से समस्या के निराकरण की मांग की है।

व्यापारियों, उद्योगपतियों को किया साइबर अपराधों पर जागरूक

बैतूल। औद्योगिक क्षेत्र कोसमी में उद्योगपतियों और व्यापारियों की विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में साइबर टीम ने उद्योगपतियों को विभिन्न प्रकार के साइबर अपराध, जैसे फिशिंग, ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी निवेश योजनाएं, ईमेल हैकिंग और डेटा चोरी आदि से बचाव के उपायों की विस्तृत जानकारी दी। उद्योगपतियों को जागरूक करने के लिए साइबर सुरक्षा पर आधारित पंपलेट्स और जानकारीपूर्ण सामग्री भी वितरित की गई। बताया कि संवेदनशील जानकारी साझा करने में सतर्कता बरतें। मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें और नियमित रूप से बदलें। अनजान ईमेल या लिंक पर क्लिक करने से बचें। डिजिटल लेन-देन के दौरान दो-स्तरीय सत्यापन प्रक्रिया अपनाएं। किसी भी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी होने पर तुरंत पुलिस हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें। संबंधित साइबर अपराध को समय पर रिपोर्ट करें ताकि अपराधियों पर कार्रवाई की जा सके। व्यापारिक ईमेल से जुड़े लेन-देन में अतिरिक्त सतर्कता बरतें। साइबर सुरक्षा के लिए नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता सत्र आयोजित करें। व्यापारिक डेटा को सुरक्षित रखने के लिए अपडेटेड सॉफ्टवेयर और एंटीवायरस का उपयोग करें। बैतूल पुलिस द्वारा इससे पहले भी शासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य संस्थानों में साइबर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इन शिविरों में युवाओं और नागरिकों को साइबर अपराधों से बचने के लिए उपयोगी जानकारी दी गई। भविष्य में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम व्यापारियों, नागरिकों और अन्य वर्गों के लिए आयोजित किए जाएंगे। बता दे कि पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार साइबर अपराधों की रोकथाम एवं ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव के लिए बैतूल पुलिस द्वारा लगातार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

करियर काउंसलिंग शिविर ने दिखाई उज्जवल भविष्य की राह

72 स्कूलों में करियर काउंसलिंग से बदली विद्यार्थियों की सोच

बैतूल। जिले में 18 से 28 दिसंबर तक जनकल्याण पर्व के अंतर्गत आयोजित करियर काउंसलिंग शिविर ने 11 हजार से अधिक विद्यार्थियों को करियर की सही दिशा दिखाने का काम किया। यह शिविर स्कूल शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश द्वारा जिले के चयनित 72 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित किया गया। करियर काउंसलिंग शिविर का आयोजन प्रतिदिन एक ब्लॉक के आठ स्कूलों में किया गया। इस शिविर में विद्यार्थियों को करियर के सही चुनाव, पाठ्यक्रमों की जानकारी, प्रवेश परीक्षाओं, और शासकीय छात्रवृत्तियों के बारे में विस्तार से बताया गया। करियर काउंसलिंग का जिम्मा पीएम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जुवाड़ी के करियर काउंसलर शिखर मायवाड़ ने संभाला, जिन्होंने विद्यार्थियों को करियर से जुड़ी सामान्य जानकारी दी, उनकी विशिष्ट रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रमों और संस्थानों की जानकारी भी दी। शिविर में फैशन डिजाइनिंग,

ड्राइंग और पेंटिंग जैसे क्रिएटिव कोर्सेस के साथ-साथ खेलों में भविष्य बनाने के लिए आवश्यक कोर्स और राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों की जानकारी दी गई। मेडिकल और पैरामेडिकल कोर्सेस में प्रवेश लेने और इनसे जुड़ी छात्रवृत्ति योजनाओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। शिखर मायवाड़ ने नई शिक्षा नीति के तहत करियर परामर्श को विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण समाधान प्लेटफार्म बताया। उन्होंने कहा कि 12वीं के बाद करियर चयन की समस्या हर विद्यार्थी के जीवन में एक अहम चुनौती होती है, और यह शिविर उन्हें उस दिशा में सही मार्गदर्शन प्रदान करता है।

विद्यार्थियों के सवालों का किया समाधान- शिविर में विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया। उन्होंने करियर से जुड़ी अपनी दुविधाओं पर खुलकर सवाल पूछे, जिनका करियर काउंसलर ने बड़े ही सरल और प्रभावी ढंग से उत्तर दिया। इससे छात्रों को नए पाठ्यक्रमों में प्रवेश और उनके करियर की राह तय करने में बड़ी मदद मिली। यह शिविर जिले के विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा मंच साबित हुआ, जिसने उन्हें भविष्य के लिए सही राह दिखाने में मदद की। करियर काउंसलिंग के जरिए छात्रों ने अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों और करियर विकल्पों को समझा।

महावीर इंटरनेशनल द्वारा आयोजित जलसा द सतरंगी प्रदर्शनी

लकी ड्रॉ पुरस्कार वितरण के साथ हुआ समापन

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल के महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से महावीर इंटरनेशनल संकल्प बैतूल टीम द्वारा हर वर्ष 2 दिन सतरंगी मेले और प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। संस्था की मीडिया प्रभारी वीरा वंदना पगारिया ने बताया कि इस आयोजन से महिला उद्यमियों को एक सशक्त प्लेटफॉर्म मिलता है जिससे कि वे अपने

व्यवसाय को बढ़ावा दे कर आत्मनिर्भर बनती है एवं उनमे आत्मविश्वास बढ़ता है। इस आयोजन में हर वर्ष, सिर्फ़ बैतूल की ही नहीं बल्कि देश के अन्य शहरों से आयी हुई 40-45 महिला उद्यमी अपने अपने व्यावसायिक क्षेत्र मे उन्नति प्राप्त कर अपने व्यवसाय को पहचान देती हैं। संस्था की मीडिया प्रभारी वीरा वंदना पगारिया ने बताया कि इसमें शहर के नागरिकों ने बहुत उत्साह से सहभागिता की स्टाल के साथ ही यहां विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गयी थी, जिसमें तुलसी डेकोरेशन में प्रथम भावना सचिन शर्मा, द्वितीय श्वेता मिगलानी, तृतीय यामिनी कोसले, हिमा मेहता डांस प्रतियोगिता प्रथम खुशी चंदेल, द्वितीय शिविका तोरिया, तृतीय तेजस्वी राजपुरोहित, द्वितीय ग्रुप में शैली कोसले गायन प्रतियोगिता ग्रुप प्रथम में रेवांश गोठी, द्वितीय शरयु शेलके ग्रुप द्वितीय में प्रथम दिवित जैन, द्वितीय अक्षज वागद्रे, तृतीय ग्रुप में प्रथम मोनिका वागद्रे, द्वितीय कीर्ति ठाकुर, फेंसी ड्रेस प्रतियोगिता ग्रुप वन में प्रथम शरयु शेलके द्वितीय अनाया अग्रवाल ग्रुप टू में प्रथम महक मोटवानी, द्वितीय युग खण्डेलवाल, लकी ड्रा मे प्रथम जीनू गोठी, द्वितीय शुभम सुपटकर एवं कोमल तथा तृतीय स्थान रिज़ा ने प्राप्त किया जिन्हे पुरुस्कार वितरण किया गया। इस सफल आयोजन की सफलता में संस्था के सभी सदस्यों एवं आगंतुक उद्यमियों के साथ शहर के नागरिकों का सहयोग सराहनीय रहा। संस्था की ट्रस्टी वीरा सरला तातेड़ , डिप्टी डायरेक्टर वीरा अंशू पगारिया , वीरा जूली रांका , अध्यक्ष वीरा पूनम मेहता एवं सचिव वीरा प्रतिभा लुहाडिया एवं संस्था के सभी सदस्यों ने जलसा में आने वाले सम्मानित महानुभावों का आभार व्यक्त किया है।

'धूम-3' के आमिर खान की तरह एक भाई करता था चोरी, जुड़वा हमशक्ल दे रहा था पुलिस को चकमा

मऊगंज (नप्र)। बॉलीवुड की मशहूर फिल्म 'धूम 3' में आमिर खान बैंकों में चोरी करने के बाद गायब हो जाते थे और उसी समय वह दूसरी जगह भी होते थे। फिल्म में आमिर का डबल रोल था लेकिन पुलिस को इसका पता नहीं था, इसलिए पुलिस से बच जाते थे। ऐसा ही मामला मध्य प्रदेश के मऊगंज से सामने आया है, जहां दो जुड़वा भाई मिलकर 'धूम 3' की आमिर खान की तरह चोरी कर पुलिस को चकमा दे रहे थे।

3 शातिर चोरों को पुलिस ने पकड़ा

मऊगंज पुलिस ने चोरी की इस बड़ी वारदात का खुलासा किया है, जिसमें तीन चोरों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें से दो जुड़वा भाई, सौरभ वर्मा और संजीव वर्मा, शातिर अपराधी थे। ये दोनों चोरी की वारदात को अंजाम देने के लिए बहुत ही चालाकी से काम करते थे।

एक सीसीटीवी में, दूसरा भाई करता था चोरी

वारदात के दौरान एक भाई किसी अन्य स्थान पर सीसीटीवी कैमरे के सामने रहता था, जबकि दूसरा भाई साथियों के साथ मिलकर चोरी करता था। घटना के समय आरोपी के दूसरी जगह मौजूद होने का सबूत पाकर बरी हो जाते थे। इस तरह से एक भाई वारदात करने के बाद पुलिस को गुमराह करने में सफल रहता था।

23 दिसंबर की चोरी में पकड़े गए

23 दिसंबर को मऊगंज के चाक मोड़ इलाके में सत्यभान सोनी के घर में चोरी हुई थी, जिसमें लाखों रुपये के जेवरात और नगदी चोरी किए गए थे। पुलिस ने जांच शुरू की और तीन आरोपियों को पकड़ा, जिनमें सौरभ वर्मा, रविशंकर विश्वकर्मा और जगन्नाथ केवट शामिल थे।

एक जैसे कपड़े पहनकर चकमा देते थे जुड़वा भाई

एसपी रसना ठाकुर ने बताया कि पुलिस ने तीन चोरों को पकड़ा, जिनमें सौरभ वर्मा, रविशंकर विश्वकर्मा, और जगन्नाथ केवट शामिल थे। सौरभ वर्मा का जुड़वा भाई संजीव वर्मा था, जो हूबहू उसी जैसा दिखता था। सौरभ के साथ चोरी की वारदातों में संजीव की अहम भूमिका होती थी, क्योंकि वह अन्य जगह सीसीटीवी निगरानी में रहता था और पुलिस को गुमराह करता था।

पहचानने में मुश्किल हुई

दोनों जुड़वा भाई कभी एक साथ नहीं रहते थे, और उनकी पहचान कुछ गिने-चुने लोगों को ही थी। इन जुड़वा भाइयों के एक जैसे दिखने और एक ही रंग के कपड़े पहनने के कारण पुलिस को इन्हें पहचानने में मुश्किल हुई। पुलिस ने जब एक को पकड़ा, तो दूसरा पैरवी करने पहुंचा, जिससे जुड़वा भाइयों का राज खुला और लाखों रुपए के चोरी के जेवरात बरामद किए गए।

ऑस्कर को रास नहीं आई 'लापता लेडीज'

97 वें ऑस्कर अवॉर्ड-2025 की रेस से किरण राव की फिल्म 'लापता लेडीज' बाहर हो गई। यह फिल्म अंतिम 15 फिल्मों की सूची में शामिल नहीं हो सकी। एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज ने ने इस बात की जानकारी दी। अब तक भारत की तरफ से ऑस्कर की फॉरेन फिल्म कैटेगरी में 3 फिल्में मदर इंडिया, सलाम बॉम्बे और 'लगान' नॉमिनेट की जा चुकी हैं। लेकिन, किसी को भी अवॉर्ड नहीं मिल सका।

फिल्म 'लापता लेडीज' की कहानी एक ग्रामीण इलाके से शुरू होती है। गांव में शादियों का सीजन चल रहा है। दो युवक अपनी दुल्हनों को लेकर ट्रेन में चढ़ते हैं। दोनों दुल्हनों के चेहरे पर घूंघट है, जिसकी वजह से उनका चेहरा नहीं दिख रहा है। सफर खत्म होने के बाद दोनों दुल्हनें नीचे उतरती हैं और कहीं लापता हो जाती हैं। एक युवक 'दीपक' गलती से दूसरी दुल्हन 'पुष्पा' को अपने घर ले आता है। उसकी असल पत्नी 'फूल' वहीं स्टेशन पर ही रह जाती है। लेकिन, इस फिल्म को ऑस्कर की रेस से बाहर कर दिया गया।

टिश-इंडियन डायरेक्टर संध्या की फिल्म 'संतोष' अंतिम 15 में जगह बनाने में जरूर सफल रही। फिल्म ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व करेगी। फिल्म 'लापता लेडीज' को फॉरेन कैटेगरी में अवार्ड के लिए भेजा गया था। फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया ने 23 सितंबर को इसे ऑस्कर में इसे भेजने घोषणा की थी। इसे किरण राव ने डायरेक्ट किया और ये फिल्म आमिर खान प्रोडक्शन्स के बैनर तले बनाई गई थी। इसमें रवि किशन, स्पर्श श्रीवास्तव, प्रतिभा रांटा और नितांशी गोयल मुख्य भूमिका में हैं।

ऑस्कर अवार्ड के लिए नॉमिनेशन का ऐलान 17 जनवरी को किया जाएगा। 2 मार्च को ऑस्कर अवॉर्ड सेरेमनी होगी। इसी में विनर्स का ऐलान किया जाएगा। 'सैम बहादुर' और 'सावरकर' भी सिलेक्शन की दौड़ में थीं। फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया सिलेक्शन कमेटी की 13 सदस्यों वाली ज्यूरी ने भारत से 'लापता लेडीज' को चुना था। ऑस्कर नॉमिनेशन की रेस में हनु-मान, कल्कि 2898 एड़ी, एनिमल, चंदू चैंपियन, सैम बहादुर, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, गुड लक, घरत गणपति, मैदान, जोरम, कोट्टुकाली, जामा, अर्टिकल 370, अट्टम, आदुजीविथम और ऑल वी इमेजिन ऐज़ लाइट समेत कुल 29 फिल्में शामिल थीं। लेकिन, ज़्यूरी ने फैसला 'लापता लेडीज' के पक्ष में दिया।

किरण राव ने कहा था कि पूरी टीम के हार्डवर्क से यह अचीवमेंट मिला। फिल्म की नॉमिनेशन के बाद डायरेक्टर किरण राव ने यह भी कहा था कि मैं बेहद सम्मानित और खुशी महसूस कर रही हूं कि हमारी फिल्म 'लापता लेडीज' को ऑस्कर में भारत की तरफ से ऑफिशियल एंट्री के रूप में चुना गया। यह अचीवमेंट मेरी पूरी टीम के हार्डवर्क का नतीजा है, जिनके समर्पण और जुनून ने इस कहानी को जीवंत किया। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म दुनियाभर के दर्शकों को भी पसंद आएगी।

किरण ने यह भी कहा था कि मैं सिलेक्शन कमेटी के उन सभी लोगों का धन्यवाद करती हूं, जिन्होंने इस फिल्म पर भरोसा किया। मैं आमिर खान प्रोडक्शंस और जियो स्टूडियोज की भी शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने इस फिल्म को सपोर्ट किया। अंत में अपनी ऑडियंस को थैंक्स कहना चाहूंगी, जिन्होंने इस फिल्म को इतना प्यार दिया। 5 करोड़ में बनी लापता लेडीज ने 25 करोड़ कमाए। फिल्म 'लापता लेडीज' इसी साल 1 मार्च को थिएटर्स में रिलीज हुई थी। इस फिल्म को आमिर की सेकेंड एक्स वाइफ किरण राव ने डायरेक्ट किया था। 5 करोड़ में बनी इस फिल्म ने भले ही बॉक्स ऑफिस पर लाइफटाइम 25 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया हो, पर इस फिल्म की क्रिटिक्स और पब्लिक दोनों ने ही जमकर तारीफ की थी।

रियल बॉक्स

दरवाजा तोड़ने फिर लौट आए दया!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

टीवी को आए 6 दशक से ज्यादा हो गए। लेकिन, इतने लंबे अरसे बाद भी यदि दर्शकों की पसंद पर खरे उतरे सीरियलों का जिक्र किया जाए, तो ऐसे सीरियल उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। इन्हीं में से एक है क्राइम-इन्वेस्टिगेशन शो 'सीआईडी' जो अपने बहुप्रतीक्षित दूसरे सीजन के साथ वापस आ गया। करीब 21 साल तक ये नॉन स्टॉप प्रसारित होता रहा। इसके बाद ये 6 साल तक छोटे परदे से गायब हो गया था। अब ये फिर अपने उसी कलेवर के साथ वापस लौट आया। जिस तरह फिल्मों का दूसरा सीजन आता है 'सीआईडी' की वापसी भी कुछ उसी तरह हुई। शो के वही तीन प्रमुख किरदार हैं जिनमें कोई बदलाव नहीं किया गया। इसके प्रमुख किरदार प्रद्युम्न सिंह हैं, जो 'सीआईडी' के एसीपी की भूमिका में हैं। 'सीआईडी' 1998 में 'सोनी टीवी' पर आना शुरू हुआ था। 2018 तक इस शो ने छोटे परदे के दर्शकों का मनोरंजन किया। एसीपी प्रद्युम्न सिंह और इंस्पेक्टर दया का आज भी लोग जिक्र करते हैं। इसके चर्चित डायलॉग 'कुछ तो गड़बड़ है' और 'दया दरवाजा तोड़ो' लोगों की बातचीत का जैसे हिस्सा बन गए। 6 साल के लंबे अंतराल के बाद 'सीआईडी' फिर छोटे परदे पर उसी चैनल पर वापस आ गया। शो के कलाकार अपने अभिनय की बदौलत घर-घर में मशहूर थे। अब एक बार फिर पसंदीदा किरदारों की छोटे परदे पर वापसी हो गई।

लंबे अरसे बाद फिल्मों के प्रति दर्शकों की रूचि फिर बढ़ने लगी है। फ़िल्में हिट और सुपरहिट होने लगी। इसके अलावा ओटीटी जैसा विकल्प भी दर्शकों की पसंद में शामिल हो गया। ऐसे में टीवी सीरियल दर्शकों की रूचि से बाहर होने लगे हैं। इस माहौल में 'सीआईडी' की वापसी अलग तरह का सुकून है। अपराध कथाओं पर आधारित ये सीरियल भले ही चैनल पर बंद हो गया था, पर इसकी दो एपिसोड लंबी कहानियां कई बार दिखाई देती रही। टीवी पर 'सीआईडी' की अहमियत वैसी ही थी, जैसी रामानंद सागर के 'रामायण' और बीआर चोपड़ा की 'महाभारत' के अलावा 'हम लोग' और 'बालिका वधु' जैसे सीरियलों की रही। सीरियल के हर एपिसोड में किसी रोचक आपराधिक केस की गुत्थी 'सीआईडी' की टीम सुलझाती रही। कथानक की रोचकता और डायरेक्शन ने दर्शकों को इससे बांध रखा था। लेकिन, 6 साल के लिए जो साथ छूट गया था, वो फिर जुड़ गया। एसीपी के किरदार में शिवाजी साटम, आदित्य श्रीवास्तव और दयानंद शेट्टी की तिकड़ी पर ही इस सीरियल का दारोमदार रहा, वही आज भी है। 'सीआईडी-2' के एपिसोड सोनी टीवी के साथ अब ओटीटी 'सोनी लिव' पर भी आने लगे। बहुचर्चित किरदार एसीपी प्रद्युम्न सिंह, इंस्पेक्टर अभिजीत और दया अपनी इन्वेस्टिगेशन करने वापस आ गए।

टेलीविजन पर दो दशकों तक चलने वाले सीरियलों का इतिहास काफी लम्बा है। इसके सामने सास-बहू पुराण और पारिवारिक षड्यंत्रों वाले सीरियलों को तब तक खींचा जाता रहा, जब तक दर्शक उससे बिदकने न लगें! लेकिन, लम्बा चलकर भी जो शो दर्शकों की पसंद बने रहे, तो उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है। 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे धार्मिक ग्रंथों पर बने सीरियलों के बरसों तक चलने के अपने कारण हैं। उनका कथानक कई मोड़ लिए होता है। इनके कथानक को बीच में खत्म नहीं किया जा सकता। जबकि, अधिकांश लम्बे चलने वाले सीरियलों की कहानी को रबर की तरह तब तक खींचा जाता है, जब तक वो टूट न जाए! ऐसे में 'सीआईडी' जैसे किसी टीवी सीरियल का लगातार 21 साल मनोरंजन करना मायने रखता है। उसके बाद भी यदि दर्शकों में उसकी लोकप्रियता बनी हुई है, तो ये एक बड़ी उपलब्धि कही जाएगी! सोनी टीवी के अपराध आधारित सीरियल

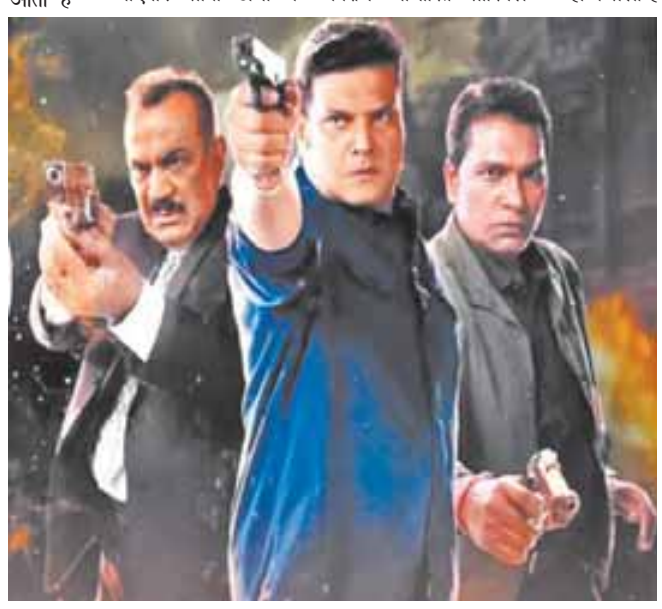

'सीआईडी' ने ये कामयाबी हासिल की थी। ये शो अपने पहले सीजन में दो दशक तक से दर्शकों का मनोरंजन करता रहा और आज भी इसे पसंद करने वाले कम नहीं हुए। इस शो में हर बार नए केस आते रहते हैं, जिन्हें सीआईडी की पूरी टीम मिलकर हल करती है।

'सीआईडी' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है कथानक की कसावट और रोचकता के साथ कलाकार का अभिनय। एसीपी प्रद्युम्न सिंह के नाम से शिवाजी साटम इस शो के केंद्रीय पात्र हैं। इसके अलावा आदित्य श्रीवास्तव, दयानंद शेट्टी, दिनेश फड़नीस, श्रद्धा मुसले, अंशा सय्यद और नरेंद्र गुप्ता जैसे कलाकारों की टीम ने जो किया वो कामयाबी का शिखर बन गया। यह शो अपराध और हत्या के रहस्यों को सुलझाने वाली पैचीदा कहानी के लिए जाना जाता रहा है। दो दशक किसी एक शो का परदे पर बने रहना आसान नहीं है। यह शो दुनिया में सबसे लम्बे समय तक चलते रहने वाले शो की लिस्ट में भी शामिल किया गया था। शो के निर्माता और एसीपी प्रद्युम्न बने शिवाजी साटम ने खुद एक बार कहा था कि उन्हें कभी आभास नहीं था कि 'सीआईडी' का सफर इतना लम्बा होगा। 'सीआईडी' पूरी दुनिया में सबसे लंबे समय तक चलने वाला शो बना, तो इसके पीछे दर्शकों का लगाव ही रहा।

छह साल पहले 27 अक्टूबर 2018 को जब 21 साल तक चलने के बाद यह शो बंद होने वाला था, तब इसे लेकर कई तरह की चर्चा मीडिया में थी। उन्हीं में से एक थी चैनल और शो के प्रोड्यूसर के बीच सब कुछ ठीक नहीं है, इसलिए शो को बंद किया जा रहा। दया का किरदार निभाने वाले दयानंद शेट्टी ने भी कहा था कि शो के बंद होने की बात सुनकर मैं स्तब्ध हूं। शो सक्सेसफुली चल रहा था, फिर क्या वजह थी कि इसे ऑफ एयर किया जा रहा। जब ये शो बंद हुआ, इसके 1546 एपिसोड दिखाए जा चुके थे। दर्शकों के कई ग्रुप ने शो को चालू रखने की मांग की थी। अचानक शो बंद होने से दर्शक बेहद निराश हुए थे और उन्होंने चैनल-मेकर्स से इसे बंद करने का कारण भी पूछा। लेकिन, किसी के पास कोई ठोस कारण नहीं था। इसलिए माना गया कि ये चैनल का ही फैसला है। जिस समय 'सीआईडी' का प्रसारित हो रहा था, उसी समय सोनी चैनल पर ही 'क्राइम पेट्रोल' भी दिखाया जाता था। यह शो भी अपराध कथाओं पर आधारित था। इसमें भी इन्वेस्टिगेशन दिखाई जाती थी। इसके अलावा एक अन्य चैनल पर 'सावधान इंडिया' भी दिखाया जाता था। इन दो शो से 'सीआईडी' को काफी टक?कर मिली थी। हालांकि, दया उस चुभन को लंबे समय तक नहीं भूले कि कैसे 'सीआईडी' के साथ सब कुछ खत्म हो गया था। 2018 में शो ऑफ-एयर हुआ, किसी को इसका कारण नहीं पता था। शो अच्छा चल रहा था लेकिन ऑर्गेनाइज?ड तरीके से इसे टारगेट किया गया। उनका तो ये भी कहना था कि 2016 से ही चैनल इसे बंद करने की कोशिश में था। आखिरकार 2018 में उन लोगों ने शो बंद कर ही दिया।

1998 में जब 'सीआईडी' शुरू हुआ था, तब टीवी पर कोई क्राइम इन्वेस्टिगेशन आधारित शो नहीं था। इसके बाद कई चैनलों पर ऐसे शो शुरू हुए, पर 'सीआईडी' की लोकप्रियता पर कोई असर नहीं पड़ा। यही कारण है कि जब तक ये शो चलता रहा सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले टीवी क्राइम शो में एक बना रहा। इस शो के डायलॉग 'दया, दरवाजा तोड़ दो' और 'कुछ तो गड़बड़ है' सोशल मीडिया पर भी जमकर वायरल हुए। लॉकडाउन के दौर में जब सिनेमाघरों के दरवाजे बंद कर दिए गए और सीरियलों की शूटिंग पर भी रोक लग गई थी, तब घरों में बंद दर्शकों के लिए टीवी पर 'रामायण' और 'महाभारत' के साथ 'सीआईडी' के पुराने सीरियल भी दिखाए गए थे। तब भी दया ने कहा था मुझे नहीं पता था कि 'सीआईडी' रोज सुबह फिर से आ रहा है। लोग मुझे कॉल और मैसेज करके बताते कि आप सभी को टीवी पर फिर से देखना अच्छा लग रहा है। तब मुझे पता चला कि लॉकडाउन में चैनल ने शो को फिर से दिखाने का फैसला किया है। मुझे बहुत खुशी हुई थी। अब, जबकि 'सीआईडी' का दूसरा सीजन परदे पर है दया निश्चित रूप से बहुत खुश होंगे। क्योंकि, दरवाजा तो दया जैसे ताकतवर कलाकार ही तोड़ करते हैं!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बार बार श्वेता को प्यार में धोखा क्यों मिलता!

टीवी की जानी मानी एक्ट्रेस श्वेता तिवारी ने जितना नाम टीवी की दुनिया में कमाया, उस हिसाब से उनकी पर्सनल लाइफ नहीं रही। श्वेता तिवारी ने कम उम्र में ही एक बड़ा मुकाम हासिल कर लिया था। लेकिन, कम उम्र में ही श्वेता तिवारी ने शादी करने की गुस्ताखी कर दी। 44 साल की होते होते श्वेता तिवारी की 2 शादियां टूट गई। किसी को समझ नहीं आता कि श्वेता तिवारी को हर बार प्यार में क्यों धोखा मिलता है। इसके पीछे ज्योतिष बड़ा कारण है।

श्वेता तिवारी का जन्म 4 अक्टूबर 1980 को हुआ था। इससे उनका मूलांक 4 है। नंबर 4 के लोगों को अपने खास गुण होते हैं। इन गुणों की वजह से श्वेता तिवारी की जिंदगी में कई बार उतार-चढ़ाव आ चुके हैं। नंबर 4 के लोगों का स्वामी ग्रह राहु होता है। राहु से रूल करने वाले लोगों को थोड़ा घमंडी, अहंकारी और हठी माना जाता है।

4 मूलांक वाले लोगों को सलाह देने वाले लोगों को पसंद नहीं करते हैं। ऐसे लोग आजाद ख्याल वाले होते हैं। 4 नंबर वालों का विजन क्लीयर होता है। आप ऐसे लोगों के साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते। हालांकि, ये लोग काफी इमोशनल होते हैं। नंबर 4 की होने की वजह से ही श्वेता तिवारी की लव लाइफ में दिक्कत आती रहती हैं। राजा चौधरी खुद ही अपने इंटरव्यू में बता चुके हैं कि वो शादी के बाद श्वेता तिवारी को कंट्रोल करने की कोशिश करते थे। अब दर्शकों को भी समझ आ गया होगा कि श्वेता तिवारी क्यों बार-बार प्यार में धोखा खा बैठती हैं। कहना गलत नहीं होगा कि श्वेता तिवारी को अपनी पर्सनल लाइफ में कदम फूंक फूंक रखना चाहिए।

इस सुपरस्टार ने किया अजब खुलासा

फिल्म इंडस्ट्री में ज्यादातर स्टार्स ड्रिंक करते हैं। उन्होंने इस बात को सार्वजनिक मंच पर स्वीकार भी किया है। अब एक एक्टर ने एक इंटरव्यू के दौरान अपनी बुरी आदतों के बारे में बताया। इस सुपरस्टार ने खुलासा किया है कि एक समय पर वह काफी ज्यादा शराब पीने लगे थे। जब वो शराब पीते थे तो पूरी रात शराब पीते थे. ये एक्टर कोई और नहीं आमिर खान हैं। आमिर ने नाना पाटेकर के साथ जी-म्यूजिक कंपनी के यूट्यूब चैनल पर बातचीत की।

आमिर खान ने नाना पाटेकर के साथ बातचीत करते हुए बताया कि उन्होंने शराब छोड़ दी लेकिन स्मोकिंग अभी भी करते हैं। आमिर

खान ने अनुशासन को लेकर बात करते हुए कहा कि मैं अनुशासनहीन हूं। लेकिन, शूटिंग की बात आती है तो मैं हमेशा समय पर आता हूं। इसलिए जब बात मेरी फिल्मों की आती है तो मैं अनुशासनहीन नहीं हूं, लेकिन अपनी जिंदगी में मैं अनुशासनहीन हूं।

स्मृति शेष

श्याम बेनेगल

समानांतर फिल्मों का शहंशाह चला गया

अशोक जोशी

श्याम बेनेगल एक विशिष्ट दर्जे के फिल्मकार थे, जिन्होंने हिंदी सिनेमा को सामंती सिनेमा से मुक्त कर समानांतर सतह पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनका सिनेमा न तो अपने नाम के

अनुरूप श्याम था और न अन्य फिल्मकारों की तरह उसमें श्वेत रंगों की झलक ही दिखाई देती थी। सीपिया रंगों से रंगा उनका सिनेमा एक खास वर्ग को समर्पित था, जिसे सिनेमा में उनके आने से पहले अछूत ही माना गया था।

श्याम बेनेगल ने 'अंकुर' से सिनेमा की सामंतवादी सोच पर कील ठोककर जिस नए सिनेमा के बीज बोए थे वह कालांतर में न केवल सैल्यूलाइड पर अंकुरित हुए, बल्कि पल्लवित होकर फूले-फले और उसने सिनेमा को एक नई धारा से जोड़ने का काम भी किया। देखा जाए तो सोद्देश्यात्मक सिनेमा में श्याम बेनेगल का आना कोई अचरज की बात नहीं थी। सिनेमा के जिस कूल से उनका संबंध था, वह पहले से ही सिनेमा को एक नए मोड पर ले जा चुका था। महान फिल्मकार गुरुदत्त उनके ममेरे भाई थे और उनके छायाकार पिता ने उन्हें कैमरे से नाता जोड़ने के लिए प्रेरित किया। जब वे दिल्ली में थे, तो गुरूदत्त ने उन्हें फिल्मों में आने की सलाह दी थी। उन्होंने बकायदा इस सलाह को माना भी, लेकिन सिनेमा की मुख्यधारा से जुड़ने की जगह उन्होंने प्रयोगवादी सिनेमा अर्थात विज्ञापन जगत से जुड़ना बेहतर समझा। उस जमाने में विज्ञापन फिल्में बनाने वाली सबसे बडी और लोकप्रिय कंपनी 'ब्लैज' से अपने करियर की शुरुआत की।

वे चाहते तो गुरुदत्त के साथ काम कर सकते थे। लेकिन, पता नहीं क्यों उन्हें शुरू से ही गुरुदत्त की फिल्मों से ईर्ष्या रही। कालांतर में उन्होंने खुद स्वीकार किया कि जिस तरह से वह गुरुदत्त की फिल्मों की आलोचना किया करते थे, वह किसी आलोचक की प्रतिक्रिया नहीं थी बल्कि गुरुदत्त की सफलता के प्रति उनकी जलन ही थी। वह समझ ही नहीं पाए थे कि निराशावादी फिल्में बनाकर भी गुरूदत्त फिल्मों में इतने सफल क्यों हैं! 'प्यासा' जिसके रंग घुप्प अंधेरे की तरह स्याह थे और विषाद से भरपूर विषय के बावजूद वह फिल्म इतनी सफल क्यों रही! यह बात वे कभी समझ नहीं पाए। मजेदार बात तो यह है कि गुरुदत्त की कहानी 'कशमकश' पढ़ने के बाद श्याम बेनेगल की दादी ने ही गुरुदत्त को इस विषय पर फिल्म बनाने की सलाह दी थी।

गुरुदत्त की सफलता को समझने में श्याम

बेनेगल की चूक का सबसे बड़ा कारण यह था कि उन्होंने गुरुदत्त का एक ही पहलू देखा। दरअसल, गुरुदत्त फिल्म कला के साथ फिल्म व्यवसाय के भी गुरु थे। उन्हें कलात्मक फिल्में बनाने के साथ उसमें व्यावसायिक पुट देने की कला भी आती थी। यही कारण था कि दर्शकों ने 'प्यासा' को बोझिल बनने से बचने के लिए 'सर जो तेरा चकराए' जैसा गीत गुनगुनाया था। फिल्म व्यवसाय को संतुलित बनाने के लिए गुरुदत्त एक ही समय में दो फिल्में बनाया करते थे। एक फिल्म क्लास के लिए होती थी तो दूसरी मास के लिए। जिन दिनों 'कागज के फूल' बनाई उसी समय 'मिस्टर एंड मिसेज 55' और 'सीआईडी' भी बनी। जिस समय 'प्यासा' बनी उसी समय 'चौदहवीं का चांद' ने सर्वाधिक कमाऊ फिल्म बनाने का कीर्तिमान स्थापित किया। वे गुरुदत्त ही थे, जिन्होंने 'साहिब बीबी और गुलाम' जैसे विषय पर सफल फिल्म बनाई। इसके विपरीत अपनी फिल्म 'जुनून' को भव्य बनाने के चक्कर में श्याम बेनेगल ने निर्माता शशि कपूर को कर्जदार बना दिया था।

श्याम बेनेगल ने अपनी खास शैली में फिल्में बनाने का काम किया और 'अंकुर' के माध्यम से एक ऐसे सिनेमा का आविष्कार किया, जो अन्याय के खिलाफ कमजोर होने के बावजूद अपने अंदाज से विरोध कर अन्याय के प्रतिकार का एक दरवाजा तोड़ने का नाजुक सा प्रयास करता है। 'अंकुर' के अंत में एक छोटे से बालक द्वारा दम्भी और अत्याचारी जमीदार की खिड़की के कांच तोड़ने का काम इसी सोच का प्रतीक था। श्याम बेनेगल ने अपने विचारों का मंथन कर जिस फिल्म 'मंथन' का निर्माण किया, उसकी कहानी भी बडी दिलचस्प है। कम बजट की फिल्म होने

के बावजूद श्याम बेनेगल ने इसके लिए किसी फाइनेंसर का दरवाजा खटखटाने के बजाए सहकारिता से जुड़े किसानों से दो- दो रूपए का चंदा लेकर फिल्म की वित्तीय व्यवस्था करने का कमाल कर दिखाया था। फिल्म की सफलता के बाद इन्ही नन्हे फाइनेंसरों को बकायदा लाभ का मुनाफा भी बांटा गया।

जिस तरह श्याम बेनेगल का सिनेमा अलग था, उसी तरह उनके कलाकार भी अलहदा थे। यह श्याम बेनेगल ही थे जिन्होंने शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, अनंत नाग, गिरीश कर्नाड, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, अमरीश पुरी और कुलभूषण खरबंदा के नए स्वरूप को पर्दे पर प्रस्तुत किया। यदि 'अंकुर' की शबाना आजमी अपने आप में एक परिपूर्ण किरदार था तो 'मंडी' में दर्शकों ने उन्हें जिस रूप और जिस अंदाज में देखा वह अविश्वसनीय था। इसी फिल्म में नसीर ने जो अभिनय किया और जिस पात्र को पर्दे पर उतारा उसे करने और करवाने के लिए बहुत बड़ी हिम्मत चाहिए और यह हिम्मत श्याम बेनेगल ने कर दिखाई।

यदि कोई 'भूमिका' में हंसा वाडकर की भूमिका निभाने वाली स्मिता पाटिल पर गौर करे, तो पाएंगे कि स्मिता जैसी अभिनेत्री को इतनी ऊंचाईयों पर केवल श्याम बेनेगल ही पहुंचा सकते थे। श्याम बेनेगल ही थे, जो रेखा जैसी व्यावसायिक अभिनेत्री से 'कलयुग' में काम निकलवा सकते थे। पर्दे और पर्दे से बाहर एक दूसरे की प्रतिद्वंदी स्मिता और शबाना आजमी से एक साथ काम करवाना श्याम बेनेगल का कमाल था। यह बात और है कि श्याम बेनेगल शशि कपूर जैसे घोर व्यावसायिक फिल्मकार से कलात्मक फिल्मों के लिए पैसे निकलवा सकते थे। यह बात अलग है कि उनकी व्यावसायिक फिल्में असफल और कलात्मक फ़िल्में ही सफल रहीं।

1974 में श्याम बेनेगल ने 'अंकुर' के माध्यम से जो फिल्मी सफर आरम्भ किया वह 30 साल तक उनके 90 साल की उम्र तक कायम रहा। इस बीच दर्शकों को उन्होंने निशांत, चरणदास चोर, मंथन, भूमिका, जुनून, कलयुग, आरोहण, मंडी, त्रिकाल और 'यात्रा' जैसी फिल्में दी। उन्होंने बाद में 'वेलकम टू सज्जनपुर' जैसी कॉमेडी फिल्म बनाने का प्रयास भी किया जो बॉक्स ऑफिस पर फेल रहा। नई सदी में उनकी फिल्मों का आकर्षण घटने लगा और मम्मो, सरदारी बेगम, हरी भरी, जुबेदा, वेल डन अब्बा जैसी फिल्में कुछ कमाल नहीं कर पायी।

फिल्म 'मुजीब' के साथ उनका फिल्मी सफरनामा थम गया। यह भी संयोग की बात है कि उनकी फिल्म 'मुजीब' भी डूबी और बांग्लादेश से भी मुजीब की प्रतिमाएं ढहा दी गई। टीवी के लिए भी श्याम बेनेगल का योगदान अविस्मरणीय रहा। 1986 में कथा सागर से उन्होने टीवी जगत में प्रवेश किया और 1988 में उनके द्वारा बनाए गए 'भारत एक खोज' के 53 एपिसोड टीवी जगत के साथ साथ भारतीय इतिहास के एक धरोहर के रूप में स्थापित हो गए हैं। वह अपने अंतिम समय तक सक्रिय रहे। 90 साल की उम्र में भी वह दो-तीन प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे, जिनका उनके साथ ही उनका पटाक्षेप हो गया।

गुजरा हुआ जमाना... आता नहीं दुबारा!

प्रकाश पुरोहित

मे | इन दिनों शादी-ब्रेक चल रहा है... नहीं, तलाक की बात नहीं, जैसे बारिश का ब्रेक होता है ना, वैसे ही अभी शादियां मुल्तवी हैं, कुछ दिनों के लिए, ताकि जो बाकी बचे हैं, कोशिश कर लें, बच सकें तो बच लें!

ऐसे फुर्सत के समय में बरसों पुरानी शादियां याद आ रही हैं। दूल्हा-दुल्हन के अलावा कितना कुछ बदल गया है। ना तो पहले जैसी आर्थिक मुफलिसी रही और न ही भाव का अपनापन। तब शादी किसी एक घर में होती थी और पूरा मोहल्ला, गांव जैसे उसमें शामिल हो जाता था। तब हर घर टेंट-हाउस था कि लोग अपने घर में इतने बिस्तर और बर्तन-भांडे रखते थे कि किसी के भी यहां ब्याह हो, पुरा जाते थे। किसी के यहां मांगने या लेने नहीं जाना पड़ता था, बल्कि खुद हो कर दे आते थे और साथ में यह चेतावनी भी कि 'और कुछ जरूरत हो तो, बोल देना, कहीं से भी ले आएंगे, कमी नहीं रहने देना।'

दृश्य उन दिनों मिलते हैं कि गांव वालों ने डंडे ले कर बरात को कांकड़ पार किया है। नहीं, मारते तो नहीं थे, लेकिन लट्ठ ठपकारते रहते थे कि समझदार हो तो इशारा काफी है, वरना हमें ऊंगली टेढ़ी करना भी आती है।

ऐसी ही एक बरात में लड़के वाले बारातियों को रेल से ले तो आए, लेकिन वापसी की टिकट के पैसे नहीं थे। अब लड़की वाले दें तो जाएं वापस। तब अमूल का तो प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, लेकिन सहकारिता, बगैर गाजे-बाजे के खूब चल रही थी। पूरे गांव ने चंदा किया कि ये आफत रवाना तो हो। कहते हैं घर-जमाई की शुरुआत इसी तरह टिकट के पैसे नहीं होने से हुई थी कि पैसे दे जाना और अपना लड़का ले जाना। कुछ दामादजी को ससुराल इतना मुआफिक बैठ जाता था कि जब भी टिकट के पैसे आते, वह लड़की के लिए कुछ खरीद लाता, कंगन, चूड़ी, कजरा, गजरा!

पहलवानी का बड़ा जोर था और हर एक अपने को गामा से कम नहीं समझता था और यह साबित करने के लिए शादी के नाम पर यूं बिदकता था, जैसे रेपर बादशाह के नाम पर हनी सिंह। तब माताओं को आगे किया जाता था कि पहलवान भले ही अपने उस्ताद को पटक दें, लेकिन मां का कहा नहीं टालते थे। लड़की वाले भी उसी घर में शादी करना पसंद करते थे कि जहां बड़ा अगर पहलवान है तो छोटा मार खाने वाला, क्योंकि छोटे को बचाते-

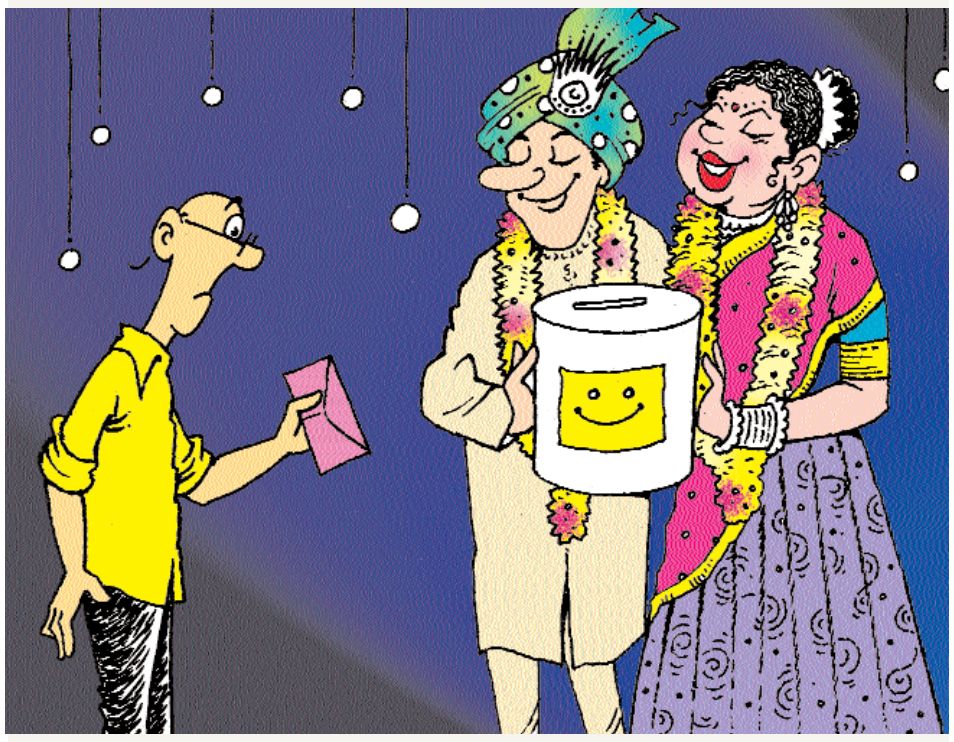

अगर लड़की का ब्याह हो तो फिर सोने पर सुहागा, पता ही नहीं चलता था, कौन परोसगारी कर गया और कौन पत्तल उठा कर जमादारिन को दे आया। सफाईकर्मी को इस तरह बुलाते थे। कई बार तो दामाद यह आखिर तक नहीं पहचान पाता था कि लड़की का अस्सल पिता और ओरिजनल साला कौन है, क्योंकि सभी तो यूं भिड़े पड़े रहते थे, जैसे उनकी ही बेटी ब्याही जा रही हो। हर घर सम्पन्न नहीं होता था या कह लीजिए कोई सम्पन नहीं होता था, इसलिए साहिर साहब के संदेश को सभी कंठस्थ कर लिया करते थे 'एक अकेला थक जाएगा, मिल कर बोझ उठाना।'

लड़की वाले यानी पिता को दहेज की चिंता नहीं रहती थी। गलत समझ रहे हैं, दहेज तो तब भी दिया और लिया जाता था। तब 'सामर्थ्य' शब्द का बड़ा चलन था कि अपनी सामर्थ्य के हिसाब से कुछ ज्यादा ही देंगे या ज्यादा ही दिया है। इसमें कमाल की बात तो यह थी कि लड़की वालों को भी पता नहीं होता था कि हमने बेटी को दहेज में क्या-क्या दिया!

वजह यह होती थी कि आसपास वाले पहले से तय कर लेते थे कि रामलाल चार बाल्टी देंगे तो घनश्याम छह कटोरी और चार थाली। गजानन की फसल कमजोर रही है तो भी वह मानेगा थोड़ी, कम से कम चार पीतल के गिलास तो देगा ही। इसी तरह पलंग, जो कि आमतौर पर लोहे के ही होते थे, बदरू चाचा ही देते रहे हैं अब तक। लोगों का अंदाज है पचास से ज्यादा तो दे ही चुके हैं। उनके बाड़े में दो चार नए पलंग धरे ही रहते थे कि क्या मालूम कभी एक साथ दो-चार ब्याह निकल आए तो! लड़के की शादी में पलंग बेच भी लिया करते थे कि धर्म के काम आएगा।

यहां तक कि बारात का भोजन भी इसी तरह सहकारिता के आधार पर होता था। बाराती भी इतने फुरसतिया और निस्ड़ल्ले होते थे कि एकाध हफ्ता तो यूं ही टिक लेते थे, जब तक दाल-रोटी की नौबत ना आ जाए, सनकते नहीं थे। ऐसे भी बचाते ही कई पहलवान हो जाते थे।

ये ही छोटे भाई उस समय शहीद होते थे, जब पहलवान बड़ा भाई, बारात के जनवासे में पहुंचने से पहले ही उड़न-छू हो लेता था। जब यह खबर फैलती थी तो कोई हड़कंप इसलिए नहीं मचता था कि ऐसा होता रहता है और लड़के का छोटा भाई तो है ना, उससे ही काम चला लेंगे। तब ना जाने कितनी ऐसी शादियां हुईं कि भाभी लेने गए थे और पत्नी लेकर आ गए। इसे रिवाज की तरह लिया जाता था। रस्मी मार-पिटाई के बाद छोटे लड़के पर आम सहमति हो ही जाती थी।

अब आप पूछेंगे ये इतनी प्राग-ऐतिहासिक बातें आज क्यों याद आ रही हैं! जवाब है, अब लोग इतने सक्षम हो गए हैं कि अपने बूते ब्याह निपटा लेते हैं, बल्कि मोहल्ले और गांव को कई बार हवा तक नहीं होती है। सहकारिता आंदोलन देश भर में चल रहा है, लेकिन जहां से उत्पन्न हुआ, वहां विपन्न हो गया।

अभी किसी मित्र ने बताया कि फॉरेन यानी विदेशों में अब हमारी नकल की जा रही है, यानी हम जो करके छोड़ चुके हैं, अब वही फैशन वहां फलफूल रहा है। बताया कि वहां अब शादी के निमंत्रण पर उस स्टोर का पता, फोन, खाता नंबर सभी होता है, जहां आपको अपना विनम्र या जबरन योगदान करना होता ही है। घर-गृहस्थी के सामान की सूची और कीमत भी लिखी रहती है कि यदि आपकी श्रद्धा या मजबूरी सौ डालर खर्च करने की है तो नव-विवाहित ने जो सामान पसंद किया है, आप उसमें योग कर सकते हैं। अर्थात आपको डिनर या लंच पर आना है तो गांठ ढीली करनी ही होगी। उस वस्तु पर आपके नाम की पर्ची लग जाएगी और लाड़ा-लाड़ी समझ जाएंगे कि जितना खिलाया है, उससे ज्यादा नहीं, तो उतना आ ही गया है। लोग कहते हैं, पश्चिम कितना आगे है, लेकिन पूरब वाले कितने अव्वल दर्जे हैं, आप खुद ही अंदाज लगा लीजिए!

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

सालों की अदला-बदली: 2024 और 2025

अ | हर साल जाते जाते गुज़रा साल कान में कुछ कहता है हम अनसुनी कर देते हैं उसकी पुकार को। अरे! भई तुम तो अब बीत गये। अब तो हम नये साल से मुलाकात करेंगे 1 तारीख की सुबह चाय पे बात करेंगे।

वाह अब तो नये साल से मुलाकात होगी

क्या तो वो हंसी रात होगी
बांहों में आसमाँ होगा तो
मुठ्ठी में तारे
यार मोबाइल पर होंगे
रिश्ते जगमगायेंगे सारे
पर ये तो बताओ नये साल
ये खुशहाली तुमने कहाँ से पाई
आख़िर गुज़रे साल ने ही तो
आगे की राह बनाई
तो सुनो नये साल
पुराने साल को एक सलाम
तो बनता है
जिस नींव पर खड़े हो उसके लिये
एहसान फरामोश मत हो
पुराने के जाने से ही तो नया संवरता है
अपने आने की खुशी में
उसके प्रति एक ''शुक्रिया'' तो बनता है...

क्या है गुज़रा साल और क?यों एक दिन में साल पुराना हो जाता है और एक दिन में अगला दिन नया साल के हिस्से आ जाता है? हम वैसे ही उठते, जागते, सोते है कोई फर्क़ नहीं पड़ता बस कुछ नये वायदे खुद से किये जाते है और डायरी में उतर जाते है।

वो कहते हैं

जो बीत गई, सो बात गई
बीती बात पर मिट्टी डाली क्या?
लगाया उस पर आज का नन्हा पौधा
बीते साल को जी भर कोसा
सोचा यही है सबसे अच्छा मौका
फिर आंख बंद कर शांति से सोचा
हम आने वाले कल का करते रहे इंतज़ार

गुज़रे साल ने तुमको कब रोका
सब कुछ कितना सुखद तो था
वर्तमान को बात बात पे टोका
अब कर रहे है हिसाब
कितने अच्छे सिक्के खोये

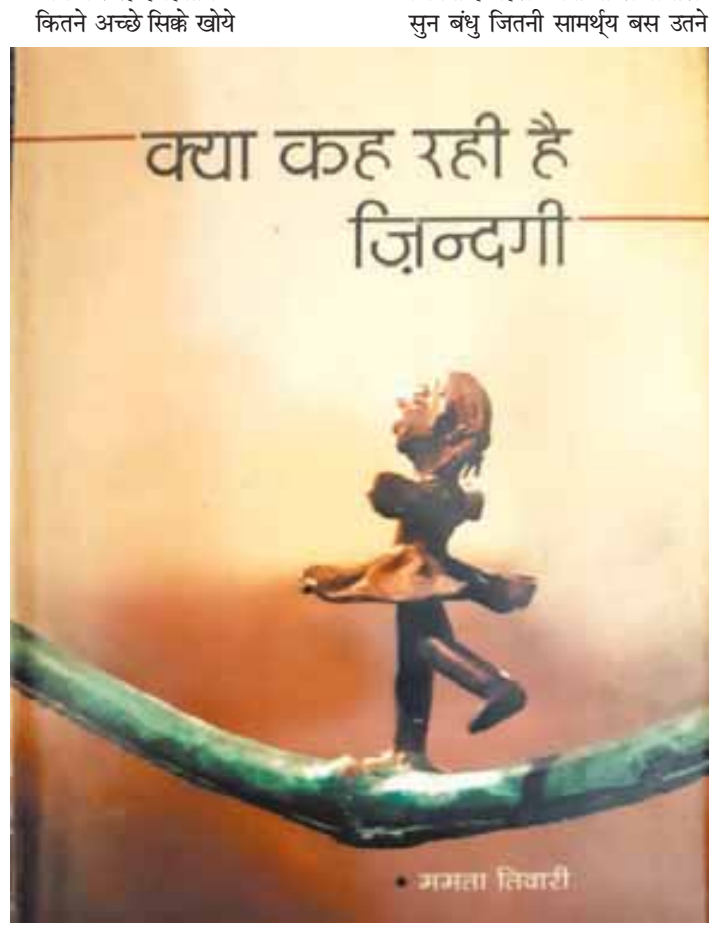

नकली नोट ज़मा करते, डी मोनेटाइज़्ड हो गये
रिश्तों को पुराने नोट की
तरह बैंक से बदला
नये रिश्ते निभाने को तैयार हो गये
अकेले भी, बिना राही के रास्ता चलता
फेहरिस्त में नंबर बढ़ाने से कुछ नहीं होता
चले हो नये साल में दुनिया संभालने

एक रिश्ता, एक संबंध तुमसे नहीं संभालता
सीख देता है हमेशा गुज़रा साल
जितना है पहले उतना तो ले संभाल
सुन बंधु जितनी सामर्थ्य बस उतने ही,
रिश्ते, धनदौलत, यार दोस्त संभाल।

लीजिये नये वादों, यादों को डायरी लिये दबे मुंह से हंसता आ गया नया साल 2025। मेरे सामने सारी डायरियाँ पटक कर बोला ये पुरानी है, और ये लो नई फूल वाली, जल्दी इसमें अच्छा अच्छा लिख डाल, मैंने पूछा तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है ? उसने कहा भई औरों को भी डायरियाँ पकड़ानी है उनके भी तो वादे-कस्में होंगी खुद से। अच्छा चलता हूँ मैं नई पुरानी डायरियों के ढेर में बैठी सोच रही थी इस साल कौन कौन से अच्छे काम करने है चलो पिछली डायरियाँ देखें। अरे ! मैं चौक गई हर पुरानी डायरी में वही रिज़ोल्यूशन, वही वादे, वही प्रतिज्ञाये। अब नया कुछ लिखने को नहीं बचा। नहीं जनाब तुम गलत सोच रही हो तुम्हारा पुराना ही नया है क्योंकि तुमने उसमें से कुछ नहीं किया है इस बरस भी डायरी में वही लिखना है, पर भई इस बरस पक्का हर वादा पूरा करना है हर कसम निभाना है चलो जो भी करना है, करते रहना अभी तो बताओ कैसा लग रहा है नये साल की पगडंडी पे कदम रखते

यूँ होते तो सब दिन एक से
ना जाने क्यूं साल के पहले दिन
दिल बड़ा प्रफुल्लित रहता
मन महुआ महुआ सा बहकता
आंखें होती उनींदी सी
दिल गुलमोहर सा फैलता
बदन गुलाब सा महकता
बिला वजह सजने को जी करता
ख़्याल नेकी से भरे
बदमाश मन इश्क को मचलता
नये नये वादे होते डायरी से
प्रण करते अब कुछ बुरा नहीं करेंगे,
जो देगा वो उसमें खुश रहेंगे
ज़िम्मेदारियों से नहीं डरेंगे
बचत करेंगे, लोगों की मदद करेंगे
खूब रखेंगे सेहत का ख़्याल
बीती बातों पे नहीं करेंगे मलाल
उसने पूछा
अरे भई! नया साल आया है
तुमने भला क्यों मुंह लटकाया है
मैंने दबी हंसी से दिया जवाब
तुमने पिछले साल का वादा फिर दुहराया है
अबके बरस इसे ज़रूर मुकम्मल करना
अगले बरस फिर डायरी में कुछ नया भरना।

सुबह

फोटो : ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

बह निकली ज्ञान सरिता की अबाध धारा

तिवारी जी आज त्रिपाठी जी का किस्सा सुना रहे थे।

ति | वारी जी का अगर व्यक्तित्व जानना है तो इस बात से जानिए कि जब उनके घर के गमले में नींबू उगे तो उन्होंने उसकी शिकंजी नहीं पी बल्कि उनमें से दो नींबू जेब में रखे शाम को चौक पर आ बैठे और ऐलान कर दिया कि अगर किसी को वोदका पीने का मन हो तो बोतल खरीद कर ले आए, नींबू हम देंगे। साथ बैठकर पीयेंगे और आनंद के साथ शाम गुजारेंगे। यह इनका नित का नियम था। इस तरह के नींबू लिए तो दुनिया में लाखों लोग किसी और के द्वारा नशा करवा देने की फिराक में घूम रहे हैं चाहे वो नशा शराब को है, पॉवर का हो या पैसे का। मगर एक तिवारी जी का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि उन्हें हर बार कोई वोदका पिलवाने वाला मिल भी जाता है।

तिवारी जी के पास शराब पीने से होने वाले नुकसान के ज्ञान का इतना अथाह भंडार था कि जैसे ही पहला पैग अंदर जाता, ज्ञान का सागर उनकी वाणी के माध्यम से बह निकलता। हर पीने वाला भी एक पैग के बाद इस तरह के ज्ञान को प्राप्त कर धन्य महसूस करता और मन ही मन ठानता कि आज बस आखिरी बार पी रहे हैं और कल से बंद। अब चूँकि कल से बंद करना ही है तो आज तो जी भर पी लें, इस चक्कर में एक बोतल और आ जाती। उस बंदे की तो खैर कल से क्या ही बंद होनी है मगर तिवारी जी की पौ बारह हो जाती। तबीयत से छक कर रोज पीते और इसकी एवज में ज्ञान बांटते।

तिवारी जी ज्ञान का प्रभाव भी ठीक उन मोटिवेशनल स्पीकरों वाला है, जो खुद भले ही उस ज्ञान का पालन करें न करें मगर सुनने वाला सुनते समय तो बस मानसिक रूप से पूरी तरह से सफल हो ही चुका होता मगर अगले दिन सुबह उठते ही फिर वही ढाक के तीन पात।

सिद्धांत एकदम स्पष्ट है कि अगर मोटिवेशनल स्पीकर को सुनकर सब सफल ही हो गए तो अगली बार उसे बुलाएगा कौन? उसकी तो कमाई ही सफलता के ज्ञान देने से और सफल हो जाने की भावना भड़काने से ही है। अक्सर लोग मोटिवेशनल स्पीकरों से पूछते भी हैं कि सर, हम जब आपको सुनते हैं तो लगता है कि बस अब आपकी बताई राह पर चल पड़ेंगे और सफल हो जाएंगे। एक दो दिन अगर चल भी लें तो भी जल्द ही मोटिवेशन खत्म हो जाता है और हम फिर पुराने ढर्रे पर आ जाते हैं। तब स्पीकर बड़ी मासूमियत से बतलाता है कि क्या शरीर को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए आप आज नहाने के बाद अगर कल न नहायें तो भी क्या आपका शरीर साफ सुथरा बना रहेगा? नहीं न ङ्क आपको शरीर को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए नित नहाना होगा। यह ठीक वैसा ही है जैसे आप अपनी भूख मिटाने के लिए तथा शरीर की ऊर्जा बनाए रखने के लिए नित भोजन करते हैं। उसी तरह आप अपने मस्तिष्क को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए, उसे मोटिवेटेड रखने के लिए नित मोटिवेशन स्पीच सुनते हैं। लोगों को बात समझ आ जाती है और वो सारी जिंदगी नए नए सफलता के उपाय स्पीच में सुनते रहते हैं कि शायद कल सफल हो जाएँ। स्पीकर की रोजी रोटी भी चलती रहती है और ज्ञान का सागर भी बहता रहता।

तिवारी जी इस बात से भली भांति परिचित हैं। उनके ज्ञान से लाभान्वित हो अगर कोई शराब वाकई में छोड़ दे तो कल उनको कौन पिलाएगा? उस पर से उनके श्रोता भी ऐसे जो पियक्कड हैं। उनको सुबह जागने के बाद यह तक तो याद रहता नहीं कि कल रात घर कौन पहुंचा गया था तो उन्हें भला रात का ज्ञान क्या ख्याल रहेगा।

कहते हैं कि तिवारी जी को इसी तरह शराब से होने वाले नुकसान का ज्ञान बांटने की एवज में शराब पीते 40 साल हो गए हैं लेकिन आजतक न तो कोई शाम खाली गई और न ही कभी उनको किसी प्रकार के प्रचार की आवश्यकता पड़ी। लगातार कोई न कोई श्रोता मिलता ही रहा और वो भी अक्सर रीपीट ङ्क किसी भी धंधे में ग्राहक भगवान तो होता ही है मगर उससे भी ज्यादा बड़ा भगवान रीपीट ग्राहक होता है। वही उनका विज्ञापन भी करते रहते हैं। बताते हैं कि कभी कभी तो दो तीन श्रोताओं को एक साथ बैठा कर ज्ञान देना पड़ता था किन्तु उन रातों में कुछ ज्यादा ही हो जाती थी। इतना आसान तो नहीं होता है न ज्ञान बांटना।

टेस्टीमोनियल के तौर पर एक श्रोता ने बताया कि आज कई बरस हो गए तिवारी जी से ज्ञान लेते मगर मजाल है कि कभी भी उन्होंने वही ज्ञान दोहराया हो। उनके पास ज्ञान का असीमित भंडार है।

अब आप देखें कि बड़ा से बड़ा मोटिवेशनल स्पीकर भी इस आक्षेप का शिकार है कि वो वही ज्ञान बार बार दोहराता है मगर तिवारी जी उनसे बहुत आगे और परे हैं।

कारण साफ है कि एक पियक्कड़ की दिमाग की मेमोरी हर सुबह रीसेट हो जाती है और कल का सारा ज्ञान डिलीट । उसे तो हर रोज का ज्ञान एक नया ज्ञान ही लगता है।

मगर देश के आमजन को क्या हुआ है जो वो हर बार उन्हीं जुमलों पर लहालोट हो उन्हीं को अपना मोटिवेशनल स्पीकर मान बैठी है, जो उनको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू साधे हुए उन्हीं पर लगातार राज करता रहता है और जनता उम्मीद का नींबू लिए घूम रही है कि अच्छे दिन आएंगे। सबकी किस्मत तिवारी जी जैसी नहीं होती। तुम्हारी भलाई इसी में है कि नींबू सूख जाने से पहले उसकी शिकंजी बना कर पी लो। उससे ज्यादा अच्छे दिन नहीं आने वाले।